ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

स्वामी दयानन्द सरस्वती

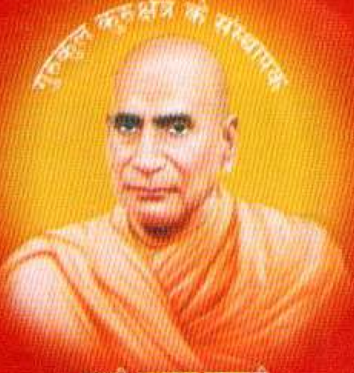

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

कार्तिक वि. स. 2080 ● कलियुगाब्द 5124 ● वर्ष : 10 ● अंक :12 ● दिसम्बर 2023

गुरुकुल में राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने किया पद्मश्री पूनम सूरी जी का भव्य अभिनन्दन

स्वामित्व :

AN ISO 9001:2015 CERTIFIED INSTITUTE

गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा 136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744–238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

No.1 Residential School Of Haryana By Education World

डीएवी प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी जी का अभिनन्दन करते हुए रामनिवास आर्य

गुरुकुल के 111वें वार्षिक महोत्सव में
पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह की झलकियां

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

ESTD. 1912
ISO 9001-2015

अनुक्रमणिका

सम्पादक परिवार

संरक्षक : आचार्य देवव्रत जी (राज्यपाल, गुजरात)
मुख्य संपादक : राजकुमार गर्ग
मार्गदर्शक : दिलावर सिंह
प्रबंध-संपादक : सुबे प्रताप
सह-संपादक : आ. सत्यप्रकाश
राजीव कुमार
कानूनी सलाहकारः राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकारः अनिल कुमार
व्यवस्थापक : राजीव कुमार
वितरण व्यवस्था : जयपाल आर्य
: जसविन्द्र आर्य
: अशोक कुमार

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	सम्पादकीय : प्रकृति का नियम है 'परिवर्तन'... राजकुमार गर्ग	02
2.	गुरुकुल का फार्म देख अभिभूत हुए जूनागढ़ विवि के डीन व वैज्ञानिक	03
3.	कचरा प्रबंधन तकनीक से खाद बनाएगा गुरुकुल-रामनिवास आर्य	04
4.	जैसा कर्म वैसा ही फल ... आचार्य सत्यप्रकाश जी	05
5.	स्वामी दयानन्द और गो-रक्षा... सेठ राधाकृष्ण आर्य	06
6.	वेदों को पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु खर्च होंगे 100 करोड़	08
7.	प्रदूषण भगाओ यज्ञ यात्रा से लोगों को किया जागरूक	09
8.	संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' - विशाल आर्य	10
9	चिन्ता का सबब बनती 'एडवांस्ड टेक्नोलॉजी'... प्रदीप दलाल	11
10.	दिल्ली व पंजाब सभा के पदाधिकारियों ने राधाकृष्ण आर्य को दी बधाई	12
11.	प्लास्टिक मल्चिंग और ड्रिप इरिगेशन... रामनिवास आर्य	13
12.	आपकी सेहत के दोस्त 'विटामिन्स और मिनरल्स'... डॉ. देव आनन्द	14
13.	जीवन कला के प्रणेता 'श्रीकृष्ण'... महाशय जयपाल आर्य	15
14.	फार्मा मार्किटिंग में हैं अपार संभावनाएं... प्रकाश जोशी	16
15.	नचिकेता के तीन वरदान... आचार्य दयाशंकर जी	17
16.	ऋषि और आचार्य के लक्षण.. शिवम् शास्त्री	19
17.	क्या इस जन्म से पहले हमारा अस्तित्व था?... मनमोहन आर्य	20
18.	सिद्धि के साधन... रवि शास्त्री	22
19.	शिक्षा मंत्रालय द्वारा सांसदों को दी जाएगी वेदों की प्रतियां	23
20.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

आवश्यक सूचनाएं

1. *'गुरुकुल दर्शन' मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।*
2. *पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 99960-26362 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया की हमें अपेक्षा रहेगी।*

-संपादक

संपादकीय

प्रकृति का नियम है 'परिवर्तन'

राजकुमार गर्ग

परिवर्तन, प्रकृति का नियम है। यहां कोई भी चीज स्थिर नहीं है। एक निश्चित समय के बाद बदलाव स्वयं हो जाता है। रात अंधियारी आती है कि फिर नया सवेरा हो सके। तूफान आते हैं, विश्रान्ति के लिए। काली घटाओं के आगमन का मतलब केवल अन्धकार और भयानक शोर ही नहीं होता। बादल गड़गड़ाकर बरस जाते हैं और आकाश में मौन खामोशी समा जाती है। उमस भरी गर्मी का हनन शीतल वर्षा की फुहार होती है।

क्या प्रकृति का यह खेल जीता जागता प्रमाण नहीं है कि आपके वर्तमान में दु:ख और पीड़ा से भरे क्षण नई खुशियों में बदल जाएंगे। क्या तूफान के बाद शान्ति यह अहसास नहीं देती कि आपके निराशा भरे अंधियारे जीवन में आशाओं, उमंगों का सूरज उगने वाला है।

जब इस संसार में कुछ भी स्थिर नहीं है, फिर आपकी परेशानियाँ भी कैसे स्थाई रह सकती हैं? निराशा कैसी भी, कितनी भी घनी क्यों न हो, आशा के ज्योतिर्मय सूरज को उगने से कौन रोक सकता है? काल के पास खुशियाँ छीनने की शक्ति है तो उसके पास पीड़ाओं, निराशाओं को हरने का अनन्त सामर्थ्य भी है किन्तु आप सोचते हैं, आपका ख्याल रहता है कि काल देवता 'मेरे दु:खों का हरण करना भूल जाएंगे' शायद मेरे आंगन में आशादीप जलाते समय उन्हें दूसरा काम आ जाए, दूसरे जरूरी कार्य में व्यस्त रह जाएं, शायद उन्हें मेरी सुध आए ही ना... नहीं यह संभव नहीं है।

काल देवता के पास सबका अलग-अलग बायोडाटा है और उनका सुपर कम्प्यूटर सुपर एक्यूरेसी के साथ काम करता है बिना किसी भूल-चूक के। कभी वायरस आदि तत्त्वों से उसकी हार्डडिस्क प्रभावित नहीं होती। यह तो हमारी प्रतीक्षा में धैर्य की ही कमी रहती है कि हम आशा सूरज का ठीक ढंग से इंतजार नहीं कर पाते। फिर इंतजार भी क्यों करना।

क्या रात होने पर हम सुबह की प्रतीक्षा करते हैं? नहीं करते, क्यों नहीं करते? क्योंकि हमें पता है कि सुबह जरूर होगी। हमारे जागकर इंतजार करने से, बेचैन होने से सुबह समय से पहले जल्दी नहीं हो जाती। दु:खों का अन्त और सुखों का सबेरा भी अपने समयानुसार ही होता है।

विचार का एक पक्ष और भी है कि सुबह को तो होना ही है, समयानुसार होना ही है। अंधकार को चले जाना ही है, तो क्या इस जाते हुए अंधकार के साथ दोस्ती नहीं की जा सकती। शायद अंधकार में हम अधिक शांति के साथ रहते हैं। दिन की अपेक्षा रात्रि अधिक विश्रान्ति देती है।

जैसे हम रात्रि को धक्के देकर बाहर नहीं निकालते, न ही उसे दुत्कारते, कोसते हैं। ऐसा व्यवहार या कहें सद्व्यवहार, सद्भावना दु:खों के प्रति भी की जा सकती है। दु:ख पीड़ाएं आएं तो उनका स्वागत करें, अजीज मेहमान की तरह उनकी खातिरदारी करें। फिर इस प्रकार की पीड़ाओं, निराशाओं का आगमन हो न हो.......इसलिए जितना अधिकतम प्रेम आए हुए दु:खों को आप दे सकें, दें।

यही रहस्य है। दु:ख, पीड़ा, निराशाओं का जितना आप अभिनन्दन करते हैं, उतनी ही ये विनम्र हो जाती हैं। संसार की यही रीति है जिससे आप जितना अधिक प्रेम करते हैं, काल देवता उसे उतनी ही जल्दी छीन लेते हैं।

जैसे ही आप अंधकार के प्रति प्रेमपूर्ण होते हैं, अन्तर्हृदय में अलौकिक ज्योति का उदय होता है। जैसे ही जिसका दु:खों के प्रति प्रेम उमड़ता है, उसके अन्तस् में दिव्य आनन्द की ज्योति जग उठती है इसलिए दु:खद क्षणों में, तनाव की परिस्थितियों में दु:ख तनाव से लड़ें, झगड़ें नहीं, केवल उनसे प्रेम करें, उन दु:खों का साथ गहरे से अनुभव करें।

बाकी काम परमात्मा पर छोड़ दें। अपने मन-मस्तिष्क से नकारात्मक विचारों को निकाल कर सकारात्मक विचारों का वास करें। इसके लिए आप अच्छी ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ें, अच्छे लोगों की संगत करें और विद्वानों के विचार सुनें। जीवन में कभी भी कोई फैसला जल्दबाजी में न लें, कोई भी निर्णय लेने के लिए पर्याप्त समय लें, अपने मित्रों से विचार-विमर्श करें और पूर्ण संतुष्टि और विश्वास के बाद ही कोई निर्णय लें ताकि भविष्य में आपको पछताना ना पड़े।

– राजकुमार गर्ग

गुरुकुल का फार्म देख अभिभूत हुए जूनागढ़ विवि के डीन और वैज्ञानिक

आचार्य देवव्रत जी के मिशन को प्रकृति और मानवता हेतु वरदान बताया

कुरुक्षेत्र, 20 नवम्बर 2023 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राकृतिक कृषि फार्म का अवलोकन करने हेतु गुजरात की जूनागढ़ प्राकृतिक कृषि यूनिवर्सिटी के डीन कई प्रोफेसर और कृषि वैज्ञानिकों के साथ पहुंचे। गुरुकुल में पहुंचने पर व्यवस्थापक रामनिवास आर्य सहित प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम ने सभी अतिथियों का जोरदार स्वागत किया और तत्पश्चात् सभी फार्म हेतु रवाना हुए। इस दल में यूनिवर्सिटी के डीन सवालिया शान्तिलाल गोवर्धन, प्रोफेसर वरंजलाल दयाभाई, देवसी शामजी, परागजी भाई, कृषि वैज्ञानिक सुरेश कुमार, प्रभुदयाल कुमावत, अमित मन्सुखभाई सहित कुल 30 लोग शामिल रहे। वहीं हालोल यूनिवर्सिटी से डॉ. वी. पी. उस्डाडिया, डॉ. जी. एन. थॉराट, एसिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. कोटाडिया, डॉ. बीमानी और फार्म मैनेजर रवि पटेल आदि ने भी गुरुकुल फार्म का दौरा किया।

फार्म पर डॉ. हरिओम ने सबसे पहले अतिथियों को सब्जियों की फसल में प्लास्टिक मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई द्वारा खरपतवार प्रबंधन के लिए तैयार किया गया मॉडल दिखाया। उन्होंने बताया कि सब्जियों की फसलों के लिए यह मॉडल बेहद कारगर साबित होगा और इससे कृषि के क्षेत्र में नई क्रांति आएगी। उन्होंने बताया कि इस मॉडल से किसान बिना जुताई के बहुत कम खर्च और पानी से अलग-अलग कई फसल ले जाएंगे और उत्पादन भी अच्छा होगा। इस दौरान उन्होंने प्राकृतिक खेती संबंधित अनेक सवालों के संतोषजनक जवाब दिये।

व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने फार्म पर स्थित जीवामृत निर्माण संयंत्र के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि यह संयंत्र पूरी तरह से ऑटोमेटिक है और इसी के माध्यम से पूरे फार्म पर फसलों को जीवामृत दिया जाता है। फार्म पर ड्रेगन फ्रूट, सेब और केले के बाग अतिथियों के आकर्षण का केन्द्र रहे। डॉ. हरिओम ने बताया कि यह करिश्मा आचार्य श्री देवव्रत जी के कुशल मार्गदर्शन और प्राकृतिक खेती से संभव हो पाया है। अतिथियों ने फार्म पर स्थित गन्ना और गन्ने से बनने वाले गुड़, शक्कर और देशी खाण्ड का भी स्वाद चखा। फार्म के अवलोकन के बाद सभी अतिथियों ने एक स्वर में प्राकृतिक खेती और आचार्य श्री देवव्रत जी के मिशन को किसानों तक पहुंचाने का आह्वान किया और माना कि प्राकृतिक खेती के माध्यम से ही आज प्रकृति और मानवता को बचाया जा सकता है।

बता दें कि लगभग 50 लोगों का यह दल गुरुकुल में प्राकृतिक खेती की ट्रेनिंग लेने आया था। तीन दिनों तक चली ट्रेनिंग में डॉ. हरिओम, डॉ. बलजीत सहारण एवं डॉ. विजय द्वारा कृषि वैज्ञानिकों की प्राकृतिक कृषि को लेकर सभी जिज्ञासा और शंकाओं को शान्त किया, प्राकृतिक कृषि के वैज्ञानिक पक्ष को मजबूती से उनके समक्ष रखा। ट्रेनिंग के अंतिम दिन दल में शामिल सभी लोगों को प्रमाण-पत्र बांटे गये।

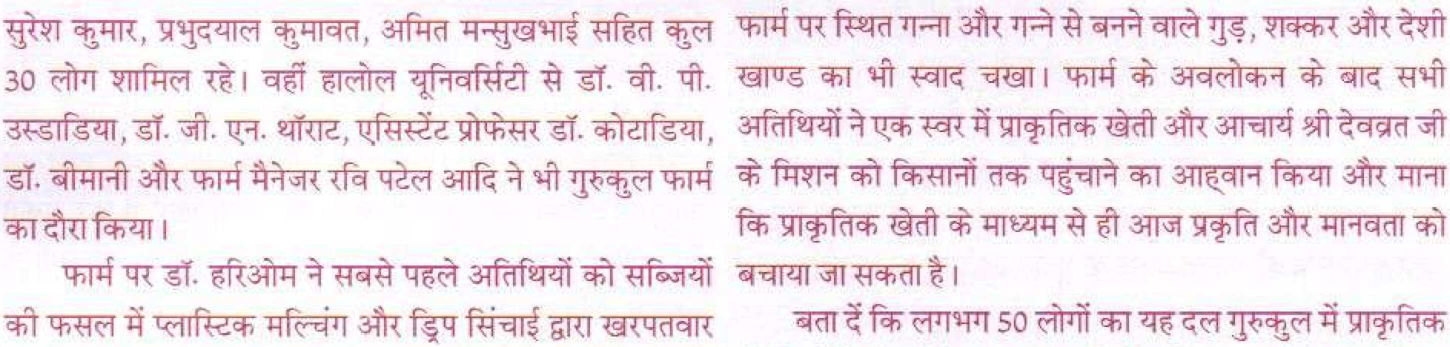

कचरा प्रबंधन तकनीक से खाद बनाएगा गुरुकुल-रामनिवास आर्य

अप्रवासी भारतीय हेमा मित्तल के मार्गदर्शन में गुरुकुल में बनाया गया आधुनिक कचरा निस्तारण प्लांट

गुरुकुल में स्थापित किये गये कूड़ा-निस्तारण प्लांट के बारे में जानकारी देते हुए अप्रवासी भारतीय हेमा मित्तल एवं गुरुकुल के व्यवस्थापक रामनिवास आर्य

कुरुक्षेत्र, 11 नवम्बर 2023 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के नाम अब एक और उपलब्धि जुड़ने वाली है, जो पर्यावरण को साफ-स्वच्छ रखने में मददगार भी साबित होगी। दरअसल गुरुकुल में न्यूजीलैंड में रहने वाली भारतीय मूल की पर्यावरण प्रेमी एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती हेमा मित्तल के सहयोग से कूड़ा निस्तारण प्लांट लगाया गया है जिसमें गुरुकुल परिसर के कूड़ा-करकट (गॉर्बेज) से केंचुआ खाद और सूखी खाद का निर्माण किया जाएगा। निश्चित रूप से श्रीमती हेमा मित्तल का यह प्रयास पर्यावरण को साफ-स्वच्छ बनाने में मददगार तो है ही,साथ ही किसानों के लिए भी लाभकारी है। इस अवसर पर श्रीमती सोनम आर्या भी मौजूद रहीं। रामनिवास आर्य ने बताया कि श्रीमती हेमा मित्तल से उनकी भेंट सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर हुई। बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ा तो न्यूजीलेंड में उनके द्वारा चलाए जा रहे कचरा प्रबंधन और पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के पुनीत उद्देश्य को देखते हुए उन्हें गुरुकुल आने का निमंत्रण दिया जिसके बाद श्रीमती हेमा मित्तल गुरुकुल में पधारीं और यहां आकर उन्होंने इस प्लांट का निर्माण कराया, साथ ही यहां के कचरा-प्रबंधन हेतु सभी को प्रेरित किया। अन्त में रामनिवास आर्य ने कूड़ा-निस्तारण प्लांट में सहयोग हेतु श्रीमती हेमा मित्तल का आभार व्यक्त किया।

श्रीमती हेमा मित्तल ने बताया कि हम थोड़ी-सी सावधानी रखकर अपने आसपास के वातावरण को साफ-स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रख सकते हैं। उन्होंने बताया कि इस प्लांट में दो तरह के डस्टबीन रखे गये है जिसमें एक लोहे की बारीक तारों से गोलाकार सेप में है और दूसरा वाटरप्रूफ बोर्ड से बनाया गया है। अब हमें जो रोजमर्रा का कूड़ा हमारे घरों या संस्थानों से निकलता है, उसमें से सबसे पहले प्लास्टिक वाला कचरा अलग करना है। प्लास्टिक को छोड़कर जो कचरा बचेगा उसे लोहे वाले डस्टबीन में डालें और उसमें हल्की नमी रखें, 15-20 दिनों में यह बहुत अच्छी खाद बन जाएगी जिसका उपयोग आप अपने गार्डन या खेतों में कर सकते हैं। आपकी रसाई से जो कचरा निकलना है, जैसे फल-सब्जियों के छिलके आदि उससे आप केंचुआ खाद बना सकते हैं। इसके बारे में विस्तृत जानकारी के लिए आप गुरुकुल में विजिट कर सकते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी
गुरुकुल कुरुक्षेत्र का प्रसिद्ध उत्पाद **हर्बल चाय**

गुरुकुल कुरुक्षेत्र फार्मेसी द्वारा निर्मित हर्बल चाय अपने विशेष गुणों के कारण लोगों के बीच काफी लोकप्रिय है। इसके मनमोहक स्वाद और अविश्वसनीय औषधीय गुणों के कारण सदियों से लोग इसका सेवन करते आए हैं। पीने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ यह पोषक तत्त्वों से युक्त है। हर्बल चाय न केवल आपके शरीर में तरल पदार्थ की पूर्ती करती है, बल्कि इसमें मौजूद पोषक तत्त्व आपको अनेक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं।

घटक द्रव्य: *हर्बल चाय में मौजूद अदरक दर्द निवारक का काम करता है, खांसी में लाभदायक है। काली मिर्च जो दीपन, पाचन का काम करती है। इसके सेवन से आमाशयिक रस की वृद्धि होती है और पाचन क्रिया सुधरती है।*

हर्बल चाय *में मौजूद सौंप का प्रयोग अजीर्ण, पेट में गैस बनना, खांसी, मुख विकार आदि रोगों में किया जाता है। मुलेठी का प्रयोग भी विभिन्न प्रकार की बीमारियां जैसे गले व फेफड़ों में जमे हुए कफ को बाहर निकालने, गला बैठ जाना, श्वास नालिकाओं में सूजन आदि में होता है। तुलसी जमे हुए कफ को साफ करती है, बुखार, लीवर का बढ़ जाना जैसे रोग में लाभदायक है। इसके सेवन से आपके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है।*

Reg. No. ORG/SC/1712/002449A

जैसा कर्म वैसा ही फल

आचार्य सत्यप्रकाश

संसार में अनेक प्रकार के लोग मिलते हैं। कुछ अच्छे लोग मिलते हैं, जो बुद्धिमान, धार्मिक, सदाचारी, धनवान और परोपकारी होते हैं। वे आपके गुणों को भी समझते हैं और आपसे प्रेम करते हैं। आपके साथ रहना, उठना-बैठना, बातचीत करना चाहते हैं। ऐसे लोगों से आप भी मित्रता रखें। उनसे सहयोग लें भी, और उन्हें सहयोग दें भी। उनके साथ आनन्द से अपना जीवन बिताएं। दूसरे प्रकार के कुछ कमजोर व्यक्ति भी आपको संसार में मिलेंगे, जो धन, बल, विद्या, बुद्धि, शारीरिक सामर्थ्य आदि कम होने से आपसे कुछ सहयोग लेना चाहते हैं, परंतु हैं अच्छे। ईमानदार हैं, धार्मिक हैं परंतु अपने किन्हीं पूर्व कर्मों के फलस्वरूप वर्तमान में कमजोर हैं, रोगी हैं, विकलांग हैं या वृद्ध हो गए हैं। ऐसे लोग आपसे सहायता प्राप्त करना चाहते हैं तो उनकी सहायता करें।

कुछ तीसरे प्रकार के लोग आपको ऐसे भी मिलेंगे, जो दुष्ट स्वभाव के होंगे जिनकी नीयत खराब होगी अथवा उनकी आदत खराब होगी। उन्होंने जीवन में पहले अच्छे कार्य अधिक नहीं किए होंगे, इस कारण से उनके संस्कार बिगड़ गए होंगे। अब अपने बिगड़े हुए संस्कारों के कारण वे आपको बार-बार दु:ख देंगे, परेशान करेंगे। अनेक बार जानबूझकर भी आपको तंग करेंगे। जब ऐसे दुष्टों की पहचान हो जावे, तब झगड़ा तो उनसे भी न करें। उनसे दूर रहें और अपना बचाव करें। अब तक जो उन्होंने आपकी हानियां कर दी हैं, उनको ईश्वर के न्याय पर छोड़ दें।

ईश्वर सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, पक्षपात रहित, पूर्ण न्यायकारी है। वह संसार की सब घटनाओं को पूरे ध्यान से देखता है। आपके साथ हुए अन्याय को भी उसने देखा है तो उन घटनाओं को ईश्वर पर छोड़कर निश्चिंत हो जाएं और ऐसा सोचें कि ईश्वर सही समय आने पर अवश्य ही इन दुष्टों को दंडित करेगा और जो मेरी हानि हुई है, उसकी पूर्ति भी अवश्य ही करेगा।

ईश्वर न्यायकारी है। न्याय के यही दोनों पक्ष होते हैं। दुष्ट को दंडित करना और अन्यायग्रस्त व्यक्ति की क्षतिपूर्ति करना। ऐसा सोचकर उस दुष्ट व्यक्ति के साथ हुई भूतकाल की दु:खदायक घटनाओं के विषय में सोचना बंद कर दें। उनको बार-बार याद न करें और अन्य शुभ कर्मों में अपना मन लगाएं। शुभ कर्मों का आचरण करते हुए आप अपना जीवन आनन्द से जीएं। भविष्य में वह आपकी हानि न कर पाए, ऐसा प्रबंध अवश्य कर लें। यदि आप ऐसा सोच कर अपना जीवन जीएंगे तो निश्चित रूप से आपका जीवन सुखमय एवं सफल होगा।

इसी प्रकार, बहुत से लोग ऐसे भी मिलते हैं जो अपना दोष नहीं देखते बल्कि दूसरों पर ही दोष लगाते रहते हैं। अनेक बार तो झूठे आरोप भी लगाते रहते हैं। जब वे इस प्रकार का दुर्व्यवहार करते हैं, तो उनके दुर्व्यवहार से दूसरे व्यक्ति को कितनी चोट लगती है, कितना कष्ट होता है, इस बात का अनुभव उन्हें सामान्य रूप से नहीं होता। इसका अनुभव तो उन्हें तब होता है, जब कोई दूसरा व्यक्ति उनके साथ इस प्रकार का दुर्व्यवहार करता है अर्थात् जब वे निर्दोष हों और कोई दूसरा व्यक्ति उन पर झूठा आरोप लगाए, तब उन्हें पता चलता है कि जिस व्यक्ति पर झूठा आरोप लगाया जाता है, उस व्यक्ति को कितना कष्ट होता है इसलिए न तो किसी पर कोई झूठा आरोप लगाना चाहिए और न ही किसी दु:खी या परेशान व्यक्ति को देखकर उसकी खिल्ली उड़ानी चाहिए। उससे घृणा नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसके प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए। उसकी समस्या को समझने का प्रयास करना चाहिए। उसकी समस्या को यथाशक्ति दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आपको बहुत पुण्य मिलेगा, बहुत शांति मिलेगी जो बाजार में बहुत धन खर्च करने पर भी नहीं मिलती।

ऐसे ही गाय, कुत्ता, बकरी, मुर्गी आदि जो प्राणी हैं, इनमें भी बिल्कुल वैसी ही आत्मा है, जैसी आपके अंदर है इसलिए इन प्राणियों पर भी अत्याचार नहीं करना चाहिए, बल्कि इनकी रक्षा करनी चाहिए। इससे भी आपको बहुत अधिक पुण्य मिलेगा और शांति मिलेगी। इस पुण्य का अगले जन्म में बहुत अच्छा फल मिलता है। यदि आप अन्य दु:खी परेशान मनुष्यों पर अथवा पशु-पक्षियों पर अन्याय, अत्याचार करेंगे तो हो सकता है, आपको भी अगले जन्मों में पशु-पक्षी आदि योनियों में दंड भोगना पड़े। नि:स्संदेह ईश्वर बहुत दयालु है, परन्तु यह भी याद रहे कि वह उतना ही कठोर भी है। उसकी दयालुता को भी ध्यान में रखें और कठोरता को भी। वह अच्छे कर्म का अच्छा फल देता है और बुरे कर्म का बुरा। किसी को भी माफ नहीं करता। यह बात सदा ध्यान में रखें और हमेशा अच्छे कर्म करें। मनुष्य जीवन मिलने पर भी यदि आप अच्छे कर्म नहीं करेंगे तो फिर निश्चित है कि अगले जन्म में आपको किसी दूसरी योनि में जन्म लेना पड़ेगा, तब आप चाहकर भी अच्छे कर्म नहीं कर पाएंगे।

-आचार्य सत्यप्रकाश
आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

स्वामी दयानन्द और गो-रक्षा

सेठ राधाकृष्ण आर्य

जब आत्मा शरीर को छोड़ देती है तो शरीर मर जाता है अर्थात् निष्क्रिय, निष्प्राण, तेजहीन हो जाता है। गाय भारत सरीखे कृषि प्रधान देश की आत्मा है और यदि गाय इस देश को छोड़ कर चली गयी तो भारत देश आत्मा के बिना शरीर मात्र रह जाएगा। यदि गो आदि पशुओं को कटने से नहीं बचाया गया तो इस राष्ट्र के पतन को निश्चित रूप से कोई नहीं बचा सकेगा।

प्राचीन काल में तो संपत्ति का मापदण्ड भी गोधन को ही माना जाता था। भारतीय संस्कृति एवं परम्परा में भारतमाता और गोमाता दोनों ही समानरूप से सेवा और रक्षा के पात्र रहे हैं। संस्कृत में तो गाय और पृथ्वी दोनों के लिए एक ही शब्द 'गो' का प्रयोग हुआ है। ऋषि दयानन्द की आर्थिक राष्ट्रीयता का वह मुख्य स्तम्भ है। उन्होंने इसे लेकर 'गोकरुणानिधि' के नाम से एक स्वतंत्र ग्रंथ की रचना करके गो-विषयक सभी प्रश्नों का विस्तार से विवेचन किया है। इसी पुस्तक से ब्रिटिश सरकार को राजद्रोह की गन्ध आने लगी थी।

गोकरुणानिधि का उद्देश्य

इस ग्रंथ की भूमिका में ऋषि दयानन्द लिखते हैं 'यह ग्रंथ इसी अभिप्राय से लिखा गया है जिससे गौ आदि पशु जहाँ तक सामर्थ्य हो बचाये जावें और उनके बचाने से दूध, घी और खेती के बढ़ने से सब का सुख बढ़ता रहे।'

आर्यराज (स्वराज्य) और गोमाता

महर्षि लिखते हैं "जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे। तभी आर्यावर्त व अन्य देशों में बड़े आनंद से मनुष्य आदि प्राणी रहते थे क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न, रस, पुष्कल होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आकार गौ आदि पशुओं को मरने वाले राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमश: आर्यों के दु:खों में वृद्धि होती जाती है क्योंकि 'नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्।'

परंतु शोक ! महाशोक ! विदेशियों से आजादी मिलने के बाद भी हमारे शासकों ने इस भारतरूपी वृक्ष की जड़ को सींचने की बजाए काटने का ही कार्य किया है। महर्षि ने गाय को सभी सुखों का मूल सिद्ध करते हुए लिखा है 'गवादि पशु और कृषि आदि कर्मों की रक्षा वृद्धि होकर सब प्रकार के उत्तम सुख मनुष्यादि प्राणियों को प्राप्त होते हैं।' गाय का हमारे दैनिक जीवन पर कितना व्यापक प्रभाव है और खाद्य समस्या को हल करने आदि बातों पर महर्षि जी लिखते है 'इनकी रक्षा में अन्न भी महंगा नहीं होता क्योंकि दूध आदि के अधिक होने से दरिद्री को भी खान-पान में दूध आदि मिलने पर न्यून ही अन्न खाया जाता है और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है। मल के न्यून होने से दुर्गन्ध भी न्यून होता है। दुर्गन्ध के स्वल्प होने से वायु और वृष्टिजल की शुद्धि भी होती है। उससे रोगों की न्यूनता होने से सबको सुख बढ़ता है।'

एक ही गाय से होने वाले लाभ पर ऋषि लिखते हैं कि 'एक गाय की एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर हजार छह सौ मनुष्यों का पालन होता है और पीढ़ी पर पीढ़ी बढ़ा कर लेखा करें तो असंख्य मनुष्यों का पालन होता है।' गुणों में सर्वश्रेष्ठ होने के कारण ही आर्यों ने गाय को सब पशुओं में सर्वोत्तम माना है। आजकल तो सभी विद्वानों आदि ने स्वीकार कर लिया है कि भारत की देशी गाय के दूध में ए२ होता है जिससे सभी रोग कैंसर व एड्स जैसे असाध्य रोग भी ठीक हो सकते हैं।

महोपकारक गाय और क्रूर मनुष्य

महर्षि जी लिखते हैं कि 'देखिये, जो पशु निरुसार तृण, पत्ते, फल, फूल आदि खावे और सार दूध आदि अमृतरूपी रत्न देवे, हल गाड़ी आदि में चलके अनेकविध अन्न आदि उत्पन्न कर सब के बुद्धि, बल, पराक्रम को बढ़ा के नीरोगता करे, पुत्र-पुत्री और मित्र आदि के समान पुरुषों के साथ विश्वास और प्रेम करें, जहाँ बांधें वही बंधे रहें, जिधर चलावें उधर चलें, जहां से हटावें वहां से हट जावें, देखने और बुलाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु या मरने वाले को देखें तो अपनी रक्षा के लिए पालन करने वाले के समीप दौड़ कर आवें कि ये हमारी रक्षा करेंगे।

जिसके मरने पर चमड़ा भी कंटक आदि से रक्षा करे, जंगल में चर के अपने बच्चे और स्वामी के लिए दूध देने को नियत स्थान पर नियत समय पर चले आवें, अपने स्वामी की रक्षा के लिए तन-मन लगावें, जिनका सर्वस्व राजा और प्रजा आदि मनुष्यों के सुखों के लिए है, इत्यादि शुभ गुणयुक्त सुखकारक पशुओं के गले छुरों से काटकर जो अपना पेट भर सब संसार की हानि करते हैं, क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी, दु:ख देने वाले और पापी जन होंगे ? इसलिए यजुर्वेद के प्रथम ही मंत्र में परमात्मा की आज्ञा है कि 'अघ्न्या: पशून् पाहि' हे पुरुष ! तू इन पशुओं को कभी मत मार अपितु इनकी रक्षा कर जिससे तेरी भी रक्षा होवे।

इसी से ब्रह्मा से लेकर आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते हैं।'

राजा को चेतावनी

गोवध से होने वाली हानियों का उल्लेख करते हुए स्वामी जी लिखते हैं 'गो आदि पशु के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है क्योंकि जब पशु न्यून हो जाते है तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है और यह भी ध्यान रखिए कि वे पशु आदि और उनके स्वामी खेती आदि कार्य करने वाले प्रजा के पशु आदि और मनुष्यों के अधिक पुरुषार्थ से ही राजा का ऐश्वर्य अधिक बढ़ता और न्यून से नष्ट हो जाता है।'

शासन विधान में गोवध-निषेध की मांग

स्वामी जी की निश्चित धारणा थी कि गाय जैसे उपकारी पशुओं का वध राजकीय व्यवस्था में दण्डनीय होना चाहिए और शासन विधान में गोवध का निषेध करने वाली धारा का समावेश होना चाहिए। ऋषि लिखते हैं कि 'बड़े आश्चर्य की बात है कि पशुओं को पीड़ा न देने के लिए न्याय पुस्तक में व्यवस्था भी लिखी है कि जो पशु दुर्बल और रोगी हों उनको कष्ट न दिया जाये। जितना बोझ सुखपूर्वक उठा सकें उतना ही उन पर धरा जावे। तो भला क्या मार डालने से भी अधिक कोई दु:ख होता है? क्या फांसी से अधिक दु:ख बन्दीगृह में होता है ?

गोवध करने वाले को प्राण-दण्ड

गाय की उपयोगिता को देखते हुए ऋषि ने गोवध करने वाले को मनुष्य की हत्या करने वाले से भी अधिक अपराधी माना। वे लिखते हैं 'इन पशुओं की हत्या करने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाला जानिए।'

इन मूक प्राणियों की दयनीय अवस्था पर आँसू बहाते हुए स्वामी जी उन पशुओं की अन्त:करण की आवाज कहलवाते हैं 'देखों हमको बिना अपराध के बुरे हाल से मारते हैं और हम रक्षा करने तथा मारने वालों को भी दूध आदि अमृत पदार्थ देने को जीवित रहना चाहते हैं और मारे जाना नहीं चाहते। देखो, हम लोगों का सर्वस्व परोपकार के लिए है और हम इसलिए पुकारते हैं कि हमको आप लोग बचावें। हम तुम्हारी भाषा में अपना दु:ख नहीं समझ सकते और आप लोग हमारी भाषा नहीं जानते। नहीं तो क्या हममें से किसी को कोई मारता तो हम भी आप लोगों के सदृश अपने मारने वालों को न्याय-व्यवस्था से फांसी पर न चढ़वा देते ?

गोचरभूमि की मांग

गोवंश की रक्षा और वृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि गवादि पशुओं के चरने के लिए पर्याप्त जमीन पड़ी हुई हो। स्वामी जी ने इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए लिखा है कि 'जो कोई मनुष्य भोजन करने उपस्थित हो उसके आगे से भोजन के पदार्थ उठा लिए जावें और उसको वहां से दूर किया जावे तो क्या वह सुख मानेगा? ऐसे ही आजकल के समय में कोई गाय आदि पशु सरकारी जंगल में जाकर घास और पत्ता जोकि उन्हीं के भोजनार्थ हैं बिना महसूल दिये खावें वा खाने को जावें तो बेचारे उन पशुओं और उनके स्वामियों की दुर्दशा होती है। जंगल में आग लग जावे तो कुछ चिंता नहीं, किन्तु वे पशु न खाने पावें। ध्यान देकर सुनिये कि जैसा सुख-दु:ख अपने को होता है वैसा ही औरों को भी समझा कीजिये।' सरकार का प्रथम कर्त्तव्य है कि वह उस समस्त गोचरभूमि को जोकि उसने जब्त की हुई है, तत्काल लौटा देवे जिससे पशु भी स्वाधीनता पूर्वक विचर सकें।

गोकृष्यादि रक्षिणी सभा

गोरक्षा उद्देश की पूर्ति के निमित्त स्वामी जी ने गांव-गांव में गोकृष्यादि रक्षिणी सभाओं की स्थापना करने की योजना देश के सामने रखी थी। यदि देश ने उस पर आचरण किया होता तो उसमें भुखमरी की सृष्टि न हुई होती। होती भी तो उसका रूप इतना भयंकर कदापि न होता। गोधन के ह्रास के साथ-साथ हमारा आर्थिक ह्रास तो हो ही रहा है, हमारे शरीर भी दिन-प्रतिदिन निर्बल होते है। हमारा सम्पूर्ण सुख और वैभव अतीत की कहानी भर रह गया है।

गौ भारत का अभिमान है, राष्ट्र की पताका है, स्वराज्य का आधार है, सुखों का स्रोत है, संपत्ति का केंद्र है, निर्धन का जीवन है, धनवान की शोभा है, सरलता और सौम्यता की सजीव मूर्ति है, परोपकार की प्रतिमा है और नि:स्वार्थ सेवा का पार्थिव रूप है। ऐसी गौ की हर प्रकार से रक्षा करना मनुष्य-मात्र का कर्त्तव्य है।

महर्षि दयानन्द जी का स्तुत्य प्रयत्न

महाराजा नाहर सिंह के नाम पत्र में महर्षि जी लिखते हैं-प्रथम तो श्रीमान् महाशयों ने करुणापूर्वक 4000 पुरुषों की ओर से हस्ताक्षर कर पत्र मुम्बापुरी में हमारे पास भेजा था परंतु अब इस विषय में श्रीमानों के प्रबन्ध से कितनी सही हुई है। जो महाशय इन महोपकारक माता-पिता के समान संसार के रक्षक करुणा पात्र गायादि पशुओं के दु:ख निवारणार्थ प्रयत्न किया है वा करते जाते है वह अवश्य सफल होकर इस आर्यावर्त की ओषधिरूप होकर सब आर्यों के हृदय की अग्नि को शान्त करेगा।

संकलन:- **सेठ राधाकृष्ण आर्य** प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वेदों को पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु खर्च होंगे 100 करोड़

नई दिल्ली- शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि केंद्र ने पाठ्यक्रम में वेदों और भारतीय भाषाओं को शामिल करने के उद्देश्य से 100 करोड़ रुपये अलग रखे हैं। जो छात्र वैदिक बोर्ड द्वारा दी जाने वाली दसवीं (वेद भूषण) और बारहवीं (वेद विभूषण) की परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं, वे अब चिकित्सा और इंजीनियरिंग सहित उच्च शिक्षा के लिए किसी भी कॉलेज में शामिल होने के पात्र होंगे। यह निर्णय सरकार द्वारा नामित निकाय, एसोसिएशन आफ इंडियन यूनिवर्सिटीज (एआइयू) द्वारा हाल ही में वैदिक शिक्षा को फिर से शुरू करने पर सहमति के बाद आया है। इस निर्णय से भारतीय शिक्षा बोर्ड, महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड और महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान जैसे वैदिक बोर्डों के छात्रों को लाभ होगा। उन्हें राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा परीक्षा द्वारा आयोजित किसी अन्य परीक्षा में बैठने की आवश्यकता नहीं होगी। इससे पहले अन्य बोर्डों के छात्रों को आगे की शिक्षा के लिए कालेजों में प्रवेश के लिए आवेदन करने के लिए एनओएसई परीक्षा उत्तीर्ण करनी पड़ती थी। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में लक्ष्मी पुराण के संस्कृत अनुवाद का विमोचन करते हुए प्रधान ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे वेदों के ज्ञान, मूल्यों और संदेश को आत्मसात करके हम सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण और महिला नेतृत्व वाले विकास की ओर बढ़ सकते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि विश्वविद्यालय नई पीढ़ियों को संस्कृत सहित भारतीय भाषाओं, साहित्य और विरासत से जोड़ने का काम करेगा। लक्ष्मी पुराण एक भक्तिपूर्ण काव्य है, जिसकी रचना महान् संतकवि बलराम दास ने 15वीं शताब्दी में पुरी, ओडिशा में की थी। बलराम दास को उड़िया भाषा में उनकी महान् कृति रामायण के कारण ओडिशा के बाल्मीकि के रूप में जाना जाता है। वे उड़िया साहित्य के पंचसखा युग से संबंधित हैं जो भक्ति और ब्रह्म ज्ञान के प्रचार के लिए जाना जाता है।

साभार: दैनिक जागरण

NCERT की किताबों में 'इंडिया' की जगह 'भारत' लिखने की सिफारिश

नई दिल्ली। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) ने अपने पाठ्यक्रम में 'इंडिया' की जगह 'भारत' शब्द लिखने की सिफारिश की है। एनसीईआरटी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप पाठ्यक्रम में बदलाव कर रहा है। इसके लिए 19 सदस्यीय समिति बनी है। समिति के अध्यक्ष सीआई इसाक ने बताया कि पैनल ने कोर्स में नाम बदलने और प्राचीन इतिहास की जगह शास्त्रीय इतिहास लिखने की सिफारिश की है। हालांकि एनसीईआरटी अध्यक्ष दिनेश सकलानी ने कहा-समिति ने सिर्फ सिफारिश की है, जो शुरुआती स्तर पर है, फैसला होना बाकी है।

एनसीईआरटी की नई किताबें तैयार करने के लिए 25 फोकस्ड ग्रुप बनाए गए हैं। इनमें से एक है-भारत का ज्ञान। इस पर अधिकांश राज्य सरकारों ने एक साल में एनसीईआरटी को कई सुझाव दिए हैं। उप्र, झारखंड व हरियाणा ने कहा है कि अंग्रेज रसायनशास्त्री जॉन डॉल्टन परमाणु सिद्धांत के जनक के रूप में न पढ़ाया जाए। उनसे बहुत पहले महर्षि कणाद ने पदार्थ के सबसे छोटे अविभाज्य कण परमाणु के बारे में बताया था। कणाद ने ही परमाणु व उसके यौगिक रूप के आयाम, गति व रासायनिक प्रक्रियाओं की व्याख्या की थी। कणाद न्यूटन से भी पहले वैशेषिक सूत्र बना चुके थे, जिसमें गति नियमों का जिक्र है।

वहीं गुजरात ने वैदिक गणित के फॉर्मूलों को ब्रह्मांड को समझने वाले कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के बराबर बताते हुए कोर्स में जोड़ने को कहा। वह रॉकेट के आविष्कार का श्रेय भी भारत को देता है। उसके मुताबिक कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध के पास गोला-बारूद वाले रॉकेट थे। 5वीं सदी में वराहमिहिर ने भूकंप की भविष्यवाणी की थी। राइट ब्रदर्स से हजारों साल पहले ईसा पूर्व चौथी सदी में महर्षि भारद्वाज वैमानिक शास्त्र लिख चुके थे। इसमें हर किस्म के विमान, जहाज, वायु अस्त्रों का जिक्र है। स्कंद पुराण में भी लिखा है कि कर्दम ऋषि ने पत्नी के लिए कहीं भी आने-जाने वाला विमान डिजाइन किया था।

गुजरात: ज्योतिष व खगोल विज्ञान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर सूर्य ग्रहण व चंद्र ग्रहण की भविष्यवाणी की जाती है।

हरियाणा: बच्चों को ऐसे विषय पढ़ाए जाएं जो अतीत की गलतियों का विश्लेषण कर सबक हासिल करने में मदद करें।

मध्य प्रदेश: उपनिषद्, गीता, महाभारत व रामायण के सार को इतिहास पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए।

छत्तीसगढ़: रामायण के दो प्रसंगों सीता अवतरण व हनुमानजी द्वारा लंका में संजीवनी बूटी लाने को कोर्स में शामिल करें, ताकि बच्चे भारतीय ज्ञान के चरम को समझें।

कर्नाटक: पिछली भाजपा सरकार का सुझाव था कि मालाबार और कश्मीरी पंडित नरसंहार जैसी घटनाएं पढ़ाई जाएं। नई कांग्रेस सरकार ये सिफारिशें अब वापस लेगी।

आंध्र प्रदेश: भारतीयता के नाम पर अंधविश्वास न जोड़ें।

साभार: दैनिक जागरण

प्रदूषण भगाओ यज्ञ यात्रा से लोगों को किया जागरूक

गुरुकुल कुरुक्षेत्र सहित रोहतक, पानीपत, कैथल, जींद में यात्रा के माध्यम से दिया पर्यावरण शुद्धि का संदेश

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार)-आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा और गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सौजन्य से सभा प्रधान राधाकृष्ण आर्य के निर्देशानुसार प्रदूषण भगाओ यज्ञ यात्रा के माध्यम से संदेश दिया कि दीपावली के शुभ अवसर पर यज्ञ के माध्यम से ईश्वर से सभी के कल्याण की कामना करें। हमारे धर्म ग्रंथो में यज्ञ को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया गया है। ऐसे में दीपों के त्योहार दीपावली पर पूरे परिवार के साथ यज्ञ करने से जहाँ सकारात्मक ऊर्जा हमारे आसपास के वातावरण में फैलेगी वहीं बढ़ते प्रदूषण पर इससे अंकुश लगेगा। वर्तमान में प्रदूषण का बढ़ता स्तर सभी के लिए बड़ी चिंता का सबब बनता जा रहा है क्योंकि जहरीली हवा में सांस लेना भी बेहद मुश्किल है। ऐसे में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा और गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सौजन्य से प्रदूषण भगाओ यज्ञ यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा को लेडी गवर्नर गुजरात श्रीमती दर्शना देवी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने बताया कि नियमित यज्ञ करने से प्रदूषण का स्तर घटेगा और हमारे आसपास का वातावरण बेहद सुगंधित होगा।

प्रधान राधाकृष्ण आर्य ने बताया पूरे हरियाणा में प्रदूषण भगाओ यज्ञ यात्रा के माध्यम से लोगों से अपील की है कि वे नियमित यज्ञ के माध्यम से वातावरण को सही रखने में मदद कर सकते हैं। कोरोना महामारी के दौरान भी यज्ञ यात्रा के माध्यम से लोगों को जागरूक किया गया था और लोगों में इससे काफी जागरूकता आई, जिसका उन्हें लाभ भी मिला। यज्ञ करने से होने वाले लाभ के वैज्ञानिक प्रमाण भी हमारे सामने हैं। भारत सहित पूरे विश्व के वैज्ञानिकों ने माना है कि यज्ञ से वातावरण की शुद्धि होती है और इसके अलावा भी यज्ञ के अनेकों लाभ हैं। राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी के मार्गदर्शन में यह अभियान प्रदेश भर में चलाया जा रहा है। इससे लोग अपनी प्राचीन विरासत और संस्कृति से भी जुड़ेंगे और यज्ञ की महिमा को सही मायने में समझ सकेंगे। यज्ञ यात्रा में जयपाल आर्य, वेद प्रचार अधिष्ठाता विशाल आर्य, अनिल आर्य, बलदेव, शिवम् शास्त्री, संजय आर्य, शुभम आर्य,अनिल शास्त्री, अमित शास्त्री, जगदीश आर्य, प्रवीण आर्य, शुभम् आर्य, बलवीर आर्य व अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

इसी प्रकार, आर्य समाज कैथल,आर्य वीर दल कैथल, स्त्री आर्य समाज कैथल के सौजन्य से महर्षि दयानंद सरस्वती निर्वाण दिवस पर यज्ञ-यात्रा निकाली गई जो आर्य समाज क्योडक गेट से

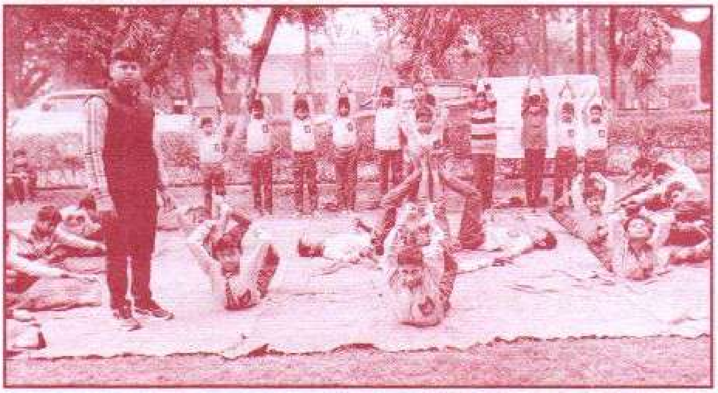

चल कर सीवन गेट, चंदाना गेट, भगत सिंह चौक, छात्रावास रोड से होते हुए एसबीआई बैंक रोड, जाट स्कूल, नेहरू गार्डन कॉलोनी, ढांड रोड से पेहोवा चौक से करनाल मार्ग आर्य समाज मंदिर में पहुंची। कार्यक्रम में आर्य समाज के गणमान्य लोगों सहित भारी संख्या में वीर-वीरांगनाओं ने भाग लिया।

इसी क्रम में सुबह 11 बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक से पर्यावरण शुद्धि-यज्ञ यात्रा का शुभारम्भ वेदप्रचार मण्डल रोहतक के प्रधान सुभाष सांगवान ने इस यात्रा को ओ३म्-ध्वज दिखाकर रवाना किया, जिसमें दो वेद प्रचार रथ तथा दो ट्रैक्टर-ट्राली द्वारा हवन करते हुए आर्य-महिलाएँ एवं आर्यपुरुष पूरे शहर में गली-गली व चौराहों, सैक्टरों, कॉलोनियों में हवन यज्ञ यात्रा निकाली, जो सुखपुरा चौक, सैनी स्कूल रोड, प्रेमनगर चौक, जेल रोड, दुर्गा कालोनी, विकास नगर, सोनीपत रोड, मॉडल टाउन, सैक्टर-14, दिल्ली बाईपास, सैक्टर-1, सैक्टर-2, सैक्टर-3, सैक्टर-4, सैक्टर-4 एक्सटेंशन और सनसिटी सैक्टर-34 से होते हुए आजादगढ़ और पाल नगर होते हुए वापस दयानन्दमठ सभा कार्यालय में सम्पन्न हुई। रास्ते में अनेक स्थानों पर श्रद्धालुओं ने हवन में आहुतियां डालीं।

यज्ञ-यात्रा के संयोजक वेदप्रचार मण्डल रोहतक के अध्यक्ष सुभाष सांगवान रहे तथा हवासिंह राठी, तहसीलदार, रामकिशन बाल्याण, स्वामी नित्यानन्द, आचार्य सन्तराम आर्य, धर्मराज दांगी, भजनोपदेशक सत्यपाल मधुर, नरेन्द्र कुमार, अंकुर आर्य, बहन दया आर्या, श्रीमती सत्यवती आर्या, श्रीमती मूर्ति देवी, श्रीमती सुशीला दलाल, श्रीमती सरोज आर्या, श्रीमती बालादेवी, श्रीमती कमलेश आर्या सहित अन्य अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सभी आर्यजनों से अपील है कि सभी आर्यजन मिलकर अपने घरों, आर्यसमाजों, शिक्षण-संस्थाओं एवं गुरुकुलों में पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञ करें।

संसार का श्रेष्ठतम कर्म 'यज्ञ'

विशाल आर्य

शतपथ ब्राह्मण में **'यज्ञो वै श्रेष्ठतंम कर्मः'** अर्थात् यज्ञ संसार का श्रेष्ठतम कर्म है यज्ञ की महिमा, वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ, मनुस्मृति, गीता आदि सभी शास्त्रों में प्रतिपादित की गई है। यज्ञ शब्द देव पूजा, संगतिकरण, दान अर्थ वाली यज धातु से नङ् प्रत्यय होकर निष्पन्न हुआ है, जिसमें देव पूजा, संगतिकरण दानादि भावों की प्रेरणा निहित है।

क्या होती है यज्ञ की शक्ति?

जर्मनी के एक वैज्ञानिक, जो कैमिस्ट्री, बॉटनी, मेडिसिन, रेडियोलॉजी के ज्ञाता हैं तथा जर्मन विश्वविद्यालय में पढ़ाते भी हैं, लिखते हैं-'स्वयं अग्निहोत्र का परीक्षण करने के बाद मैंने पाया कि सचमुच अग्निहोत्र के आचरण द्वारा मानो आपके हाथ में प्रदूषण के विरुद्ध एक अद्‌भुत अस्त्र आ जाता है। उक्त वैज्ञानिक जर्मनी की एक कैंसर इंस्टीट्यूट के संचालक भी हैं। पूना के फार्गुसन कालेज के जीवाणु शास्त्रियों ने एक प्रयोग किया। उन्होंने । 36 x 22 x14 घनफुट के एक हॉल में एक समय का अग्निहोत्र किया। परिणामस्वरूप आठ हजार घनफुट वायु में कृत्रिम रूप से निर्मित प्रदूषण का 77.5 प्रतिशत हिस्सा खत्म हो गया। इतना ही नहीं, इसी प्रयोग से उन्होंने पाया कि एक समय के ही अग्निहोत्र से 96 प्रतिशत हानिकारक कीटाणु नष्ट होते हैं। यह सब यज्ञ की लाभदायक गैसों से ही संभव हुआ।

पर्यावरण प्रदूषण-समाधान केवल यज्ञ

नदी, नहरें, तालाब, झीलें, कुएं जो सिंचाई के महत्त्वपूर्ण साधन हैं जो क्लोराइड्स पेस्टिसाइड्स व अन्य अनेक प्रकार के जहरीले रसायनों से भयंकर दूषित हो गए हैं। परिणामस्वरूप इनका पानी उत्तम फसल उत्पन्न करने में असमर्थ है। प्रदूषण के कारण ही प्रकृति का वर्षा-चक्र यानी मानसून अनिश्चित व असंतुलित हो गया है। कहीं-कहीं पर तो वर्षा का पानी इतना अम्लयुक्त यानी एसिडिक होता है कि अच्छी फसलों को भी नष्ट कर देता है। जंगलों की अंधाधुंध कटाई, नदी, नालों, तालाबों, खेतों में फेंकी जाने वाली गंदगी या कूड़े-करकट के कारण पौधों को कार्बन डाइआक्साइड का ग्रहण करने तथा पर्याप्त मात्रा में आक्सीजन को छोड़ने की प्रक्रिया मन्द होती जा रही है। इसका समाधान केवल यज्ञ ही है। मध्य प्रदेश, भोपाल में स्थित यूनियन कार्बाइड के कारखाने से गैस रिसाव के समय की एक महत्त्वपूर्ण घटना प्रस्तुत है:-

पहली घटना- 2 दिसम्बर 1984 की मध्य रात्रि में अपनी पत्नी त्रिवेणी को उल्टी करते देख श्री एस.एल. कुशवाहा की नींद रात्रि डेढ़ बजे खुल गई। श्री कुशवाहा अध्यापन का कार्य करते हैं। शीघ्र ही वे और उनके बच्चे खांसने लगे, उनकी आंखों में जलन होने लगी, सभी का दम घुटने लगा। घर से बाहर निकले तो देखा कि हाहाकार मचा है। वे सब भीड़ के साथ भागने की सोच ही रहे थे कि त्रिवेणी ने कहा कि हम सब अग्निहोत्र क्यों न करें? उस पूरे परिवार ने यज्ञ किया और 20 मिनट के अन्दर ही एमआईसी यानी मिक गैस का दुष्प्रभाव समाप्त हो गया।

दूसरी घटना-33 वर्षीय श्री एम एल राठौर अपनी पत्नी, चार बच्चों, मां तथा भाई के साथ भोपाल रेलवे स्टेशन के निकट रहते थे उस क्षेत्र में दर्जनों व्यक्ति गैस के विष से मर गए। राठौर नित्य यज्ञ करते थे, अपने परिवार के साथ वे यज्ञ करने लगे। मंत्रों के समाप्त होने पर त्र्यम्बकं यज्ञ शुरू कर दिया जिससे इस परिवार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। यह सत्य घटना अखबारों में छपी व श्री राठौर का साक्षात्कार दिखाया गया।

पिछले कुछ समय में भारत सहित अमेरिका, चिली, पोलैण्ड, जर्मनी, मारीशस आदि विश्व के अनेक देशों में अग्निहोत्र का प्रचलन काफी बढ़ा है। अमेरिका में छठे दशक में नया युग नामक एक आन्दोलन चला। अमेरिका अकेला ऐसा देश है, जहां 9 सितम्बर 1978 से अखण्ड यज्ञ दिन-रात चल रहा है। मैरीलैण्ड बाल्टीमोर में जिस जगह इस यज्ञ का आयोजन है उसका नाम है अग्निहोत्र प्रेस फार्म। मैडिसन वर्जीनिया में प्रथम वैदिक यज्ञशाला का निर्माण हुआ। इसका उद्‌घाटन 22 सितम्बर 1973 को हुआ। यह यज्ञशाला पर्वतीय क्षेत्र में है, जिसे सबसे कम प्रदूषित क्षेत्र माना जाता है। यज्ञशाला के निर्माण के बाद पाश्चात्य जगत में अग्निहोत्र का प्रचलन बढ़ा है। वहां नित नये प्रकार के प्रयोग, अनुसंधान यज्ञ की महत्ता पर हो रहे हैं। यह यज्ञशाला मात्र एक कमरा होता है, जिसमें लोग शान्त मौन रहते है। यहां प्रतिदिन सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय यज्ञ होता है। ऐसी सैकड़ों यज्ञशालाएं विश्वभर में स्थापित हैं। इतना ही नहीं अमेरिका में होम द्वारा चिकित्सा की विधि बहुत प्रसिद्ध हो रही है। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक कुमारी पैट्रिशिया, जो कैलिफोर्निया से पर्यावरण सम्बंधी इकोलाजिक पत्रिका की सम्पादिका भी हैं, ने बताया कि अमेरिका में दिनोंदिन यज्ञ के प्रति निष्ठा, श्रद्धा बढ़ रही हैं और वाशिंगटन डी. सी में अग्निहोत्र विश्वविद्यालय की स्थापना हो चुकी है। यज्ञ ही पर्यावरण प्रदूषण से होने वाले विनाश से विश्व को बचा सकता है। **- विशाल आर्य**

प्रचार प्रमुख, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

चिन्ता का सबब बनती 'एडवांस्ड टेक्नोलॉजी'

प्रदीप दलाल

कहीं का ईट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा। कंप्यूटर तकनीक की दुरुपयोग के संदर्भ में '**डीप फेक**' का खेल आज यही चरितार्थ कर रहा है। यानी किसी का चेहरा किसी में लगाकर, किसी का वीडियो किसी में मिलाकर ऐसा नकली फोटो या वीडियो बना दिया जाता है, जिसको साधारणतया समझना मुश्किल होता है कि वह असली है या नकली। एडवांस्ड टेक्नोलॉजी आज हमें अजब-गजब की दुनिया दिखा रही है। हमारी संभावनाओं के द्वार जरूर खोलती है, मगर जब तकनीक का गलत इस्तेमाल होने लगे, किसी की निजी हानि होने लगे तो यह वाकई चिंता का सबब है और समाज के लिए घातक।

फिल्म अभिनेत्री रश्मिका मंदाना के फेक वीडियो ने सारी तकनीकी करतूत की कलई खोलकर रख दी है। इस मुद्दे पर न केवल चर्चा करने बल्कि इसके दुरुपयोग पर अंकुश लगाने का वक्त आ गया है। सनद रहे कि डीप फेक का मतलब यहां घोर नकली होना है। इस तकनीक की हेराफेरी से किसी के चेहरे का फोटो या वीडियो आसानी से तोड़ा-मरोड़ा जा सकता है। किसी के आवाज की नकल की जा सकती है। जाहिर है, इससे समाज में खतरे की आशंका बढ़ जाती है। आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म या इंटरनेट के माध्यमों पर ऐसी हेरा-फेरी खूब चल रही है।

फेक वीडियो की बात करें तो अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का एक नकली वीडियो जारी हुआ था, जिसमें वे बेल्जियम से पेरिस जलवायु समझौते से अपना नाम वापस लेने की बात कर रहे थे। वैसे ही, एक वीडियो में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन रूस-यूक्रेन युद्ध की समाप्ति की घोषणा कर रहे थे। मार्क जुकरबर्ग एक वीडियो में यह कहते पाए गए कि उनके पास अर्बन लोगों के चुराए हुए डेटा पर पूरा कंट्रोल है। यह सब बिल्कुल नकली था और डीपफेक तकनीक से तैयार किया गया था।

यूके की एक एनर्जी कंपनी के प्रमुख के साथ ऐसा हुआ। उसे उसके जर्मन सीईओ की आवाज में फोन आया और उसने पैसे भेज दिए। महिलाओं को जितना रोजमर्रा की जिंदगी में निशाना बनाया गया है, इस कारण उतना ही वह वर्चुअल वर्ल्ड में भी शिकार हुई हैं। रश्मिका मंदाना का वायरल वीडियो इसी तकनीक का परिणाम है। हालांकि पुलिस ने प्रभावित तरीके से इस अपराध के खिलाफ एक्शन लेना शुरू कर दिया है।

डीप फेक वीडियो को लेकर भारत समेत दुनिया भर में चर्चा हो रही है कि इस वजह से हमारी गोपनीयता और निजता प्रभावित हो रही है। भविष्य में इसका इस्तेमाल बड़े पैमाने पर किया जा सकता है, जिससे हमें सावधान रहना चाहिए। भारत में पूरे साल किसी न किसी राज्य में चुनाव होता रहता है। जरा सोचिए कि किसी बड़े नेता की आवाज का इस्तेमाल धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने, कट्टर सोच को बढ़ावा देने, दूसरी पार्टी के किसी बड़े नेताओं पर संगीन आरोप लगाने या गलत जानकारी देने में किया गया तो मामला कितना गंभीर हो सकता है। यदि कोई फेक न्यूज बनाकर समाज में अशांति पैदा करने और महिलाओं को बदनाम करने के हथियार के रूप में इसे इस्तेमाल कर रहा है तो कितना दु:खद है। इसे हम 'डिजिटल आतंकवाद' भी कह सकते हैं। इस पर हम सबको सतर्कता दिखाने की जरूरत है।

यदि आपको सोशल मीडिया के किसी प्लेटफार्म पर कोई आपत्तिजनक चीज दिखे तो इस प्लेटफार्म को आप ईमेल के जरिए या पत्र लिखकर डिलीट करने का अनुरोध भेज सकते हैं। यदि 36 घंटे के भीतर उसे डिलीट नहीं किया तो आप उस पर कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं। डीप फेक टेक्नोलॉजी के कुछ सकारात्मक पहलू भी हैं, जैसे इसके उपयोग से विदेशी भाषा की फिल्में डबिंग कर बेहतर बनाया जा सकता है। जो अभिनेता या शख्सियत हमारे बीच आज नहीं है, उनकी आवाज या फोटो को पुन: प्रदर्शित किया जा सकता है। मास्को में ऐसा हुआ है, वहां सैमसंग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस लेमिनेट द्वारा फेक तकनीक के उपयोग से मोनालिसा के जीवन को पुन: प्रदर्शित किया गया।

इस तकनीक से स्क्लेरोसिस नामक रोग के रोगियों की आवाज को वापस लाया गया, तो कहीं युद्धग्रस्त क्षेत्र के लोगों में सहानुभूति पैदा करने में यह तकनीक सहायक बनीं। मगर चिंता इस बात की है कि इसके दुरुपयोग से समाज में जो घटनाएं घट रही हैं, उन्हें कैसे रोका जाए? हमारी सरकार और हमें इस तकनीक के प्रति जागरूक बनना पड़ेगा और हमें तकनीकी रूप से साक्षर भी होना पड़ेगा। डीप फेक टेक्नोलॉजी क्या है? इसकी पड़ताल जरूरी है। सरकार को सबसे पहले एक कानूनी ढांचा लाना चाहिए जिससे इस तकनीकी के प्रयोग पर अंकुश लगाया जा सके।

चूंकि यह मामला सेलिब्रिटी से जुड़ा था तो ज्यादा उछल गया। किसी आम आदमी का होता तो उसकी कितनी निजी क्षति होती, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। पत्रकारों और लेखकों को इस पर अपनी कलम चलानी चाहिए।

– **प्रदीप दलाल**

डायरेक्टर प्रेस एवं आईटी सेल, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान पद पर सेठ राधाकृष्ण आर्य ने पूर्ण किया एक वर्ष

दिल्ली व पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने राधाकृष्ण आर्य को दी बधाई

सेठ राधाकृष्ण आर्य को बधाई देते हुए ओएसडी टू गर्वनर डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, धर्मपाल आर्य, विनय आर्य, सुदर्शन आर्य एवं प्रेम भारद्वाज।

कुरुक्षेत्र, 30 नवम्बर 2023 : आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य के सभा प्रधान के रूप में सफलतापूर्वक एक वर्ष पूर्ण करने पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों सहित गुरुकुल के प्रधान व अन्य पदाधिकारियों ने बधाई दी। आज गुरुकुल में पहुंचने पर ओएसडी टू गर्वनर डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, प्रधान राजकुमार गर्ग, व्यवस्थापक रामनिवास आर्य द्वारा सेठ राधाकृष्ण आर्य का फूल-मालाओं से स्वागत किया गया। तत्पश्चात दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य मंत्री विनय आर्य और पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुदर्शन आर्य, मंत्री प्रेम भारद्वाज ने भी सेठ राधाकृष्ण आर्य को बधाई दी। इस अवसर पर सभा प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि समाज के श्रेष्ठ लोगों ने उन्हें सभा प्रधान के रूप में जो बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है, वह उसका पूरी ईमानदारी और निष्ठा से निर्वहन करेंगे तथा ऋषि दयानन्द के शिक्षा व आर्य समाज के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करेंगे।

ज्ञात रहे सेठ राधाकृष्ण आर्य ने विगत वर्ष 30 नवम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान पद की शपथ ली थी। अपने एक वर्ष के कार्यकाल में ही सेठ राधाकृष्ण आर्य ने अभूतपूर्व कार्य किये। उनके नेतृत्व में जहां वेद प्रचार के कार्य में गति आयी, वहीं अनेक स्थानों पर आर्य समाज की सम्पत्ति पर हुए अवैध कब्जों को मुक्त कराया गया। वेद प्रचार की बात करें तो वर्तमान में दर्जनों भजन मंडली और 30 से अधिक व्यायाम शिक्षक गांव-गांव में जाकर लोगों को समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। इतना ही नहीं ये भजन मंडलियां महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के प्राकृतिक कृषि मिशन से किसानों को जोड़ने का पुनीत कार्य भी कर रही हैं, अपने भजनों के माध्यम से ये प्रचारक प्राकृतिक खेती का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं वहीं, युवा एवं जीवन निर्माण शिविर के माध्यम से व्यायाम शिक्षक युवाओं को योग, प्राणायाम, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, डम्बल, लेजियम, स्तूप-निर्माण आदि का प्रशिक्षण देकर जहां शारीरिक रूप से मजबूत बना रहे हैं वहीं उन्हें नशाखोरी, पाखण्ड, जात-पात, कन्या भ्रूण हत्या जैसी बुराइयों से दूर रहने के लिए प्रेरित भी कर रहे हैं। लोगों में चर्चा है कि लम्बे अर्से के बाद सभा को राधाकृष्ण आर्य के रूप में एक ऐसा प्रधान मिला है जिसके नेतृत्व में ऋषि दयानन्द के अधूरे कार्य को सच्चे अर्थों में पूर्ण करने का ईमानदारी से कार्य किया जा रहा है।

सेठ राधाकृष्ण आर्य के नेतृत्व में कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, यमुनानगर, अंबाला, पंचकूला, जींद, नरवाना, हिसार, सोनीपत, पानीपत, रोहतक सहित प्रदेशभर में भजन मंडलियों के माध्यम से वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति के प्रति लोगों को जागरूक करने की मुहिम चलाई जा रही है साथ ही 'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' अभियान के तहत प्रतिदिन परिवारों में हवन-यज्ञ किया जा रहा है ताकि पर्यावरण शुद्धि के साथ लोगों को यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व से भी अवगत कराया जाए। उन्हीं के मार्गदर्शन में पिछले दिनों दीवाली पर सभी प्रचारकों द्वारा अलग-अलग स्थानों पर प्रदूषण भगाओ यज्ञ यात्रा निकालकर लोगों को यज्ञ की महत्ता और वायु प्रदूषण को दूर करने के लिए के लिए जागरूक किया गया। साथ ही महर्षि दयानन्द की 200वीं जयंती को लेकर सभा द्वारा अनेक कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं जिसमें भारी संख्या में लोग पहुंच रहे हैं। सेठ राधाकृष्ण आर्य को मनीराम आर्य, महाशय जयपाल आर्य, महाशय रामनिवास आर्य, जसविन्द्र आर्य, विशाल आर्य, अनिल आर्य, प्रदीप दलाल, सुरेन्द्र आर्य, राममेहर आर्य, शुभम् आर्य, आर्यमित्र, प्रवीण आर्य, आदि ने भी शुभकामनाएं दीं।

क्रांतिकारी पहल प्लास्टिक मल्चिंग और ड्रिप इरिगेशन

रामनिवास आर्य

किसान भाइयों अब आपको सब्जियों की फसल लेने के लिए बार-बार खेत की जुताई करने की जरूरत नहीं पड़ेगी, बस एक बार सब्जियों हेतु बैड तैयार करके उन पर आप कई फसलें ले सकते हैं जिससे न केवल आपको जुताई पर खर्च होने वाले पैसों की बचत होगी बल्कि इस तकनीक में पानी भी 50 फीसदी कम इस्तेमाल होता है और फसल भी अच्छी होती है।

हम बात कर रहे हैं सब्जियों में प्लास्टिक मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई से खरपतवार नियंत्रण तकनीक की। दरअसल, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के कृषि फार्म पर वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम एवं माइक्रो बायोलोजिस्ट डॉ. बलजीत सहारण द्वारा लगभग एक वर्ष से इस तकनीक पर एक्सपेरिमेंट किये जा रहे हैं जिसमें उन्हें काफी हद तक सफलता भी मिली है। इस प्रयोग में युवा कृषि वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार भी सहयोग कर रहे हैं।

डॉ. हरिओम के अनुसार खेती की इस तकनीक से किसान एक बार में खेत तैयार करके कई फसलें ले सकते हैं। गुरुकुल फार्म पर उन्होंने आधा कनाल, छह मरले भूमि पर यह प्रयोग किया। सबसे पहले उन्होंने चार अलग-अलग बैड बनाएं जिन पर अलग-अलग रंगों की प्लास्टिक से मल्चिंग की। इसमें ग्रे, काला, हरा और सफेद रंगों की 25 माइक्रोन की पॉलिथीन लगाई।

इन बैड्स पर एक निर्धारित दूरी पर छिद्रों में सबसे पहले मक्का की फसल लगाई गई। सिंचाई के लिए इसमें ड्रिप का प्रयोग किया गया। फसल लगाने से कटाई तक मक्का में समय-समय पर जीवामृत दिया गया जिससे कोई खास बीमारी या रोग नहीं दिखाई दिया और फसल बिना खरपतवार के बहुत अच्छी रही। थोड़ी दिक्कत मक्का के पौधों की जड़ों को उखाड़ने में हुई तो उन्हें छिद्रों में ही छोड़ दिया गया जो दूसरी फसलों के लिए खाद का कार्य करेंगे और उन्हें जरूरी पोषक तत्त्वों की पूर्ति करेंगे।

मक्का के बाद इन्हीं बैड्स पर घीया लगाया गया। आश्चर्य की बात यह है कि घीया पर भी यह प्रयोग 100फीसदी सफल रहा और केवल छह मरले भूमि पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने लगभग 6 क्विंटल घीया का उत्पादन किया जिसकी गुरुकुल के स्टॉल पर बिक्री कर अच्छा मुनाफा कमाया।

नवम्बर में घीया के बाद इन बैड्स पर टमाटर लगाया गया जिसके पौधे बहुत अच्छी ग्रोथ कर रहे हैं। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि चार अलग-अलग रंगों की मल्चिंग में थोड़ा फर्क अवश्य देखा गया। मसलन, हरी मल्चिंग वाली फसल सबसे अच्छी रही, वहीं सफेद रंग की प्लास्टिक मल्चिंग वाली फसल भी ठीक रही मगर ग्रे और काली मल्चिंग वाली बैड्स पर पुटाव औसत रहा। दूसरी जरूरी बात यह है कि 25 माइक्रोन की जगह 50 या 100 माइक्रोन की प्लास्टिक उपयोग में लाई जा सकती है जो सुविधा के हिसाब से उठाई भी जा सके।

जहां तक इन बैड्स की मिट्टी की फीजिकल कंडीशन की बात है तो वह बहुत अच्छी पायी गई। जब घीया की फसल के बाद बैड्स के छिद्रों से मक्का के पौधों की जड़े निकाली गई तो वे आसानी से निकल गई और अन्दर की भूमि बहुत भुरभुरी और नरम पायी गई अर्थात् जैसी स्थिति खेत को जुताई करने से मिट्टी की होती है, वही स्थिति इन बैड्स की मिट्टी की मिली, ऐसा केवल जीवामृत के कारण हो सका है। जहां इस तकनीक में खरपतवार नियत्रंण हुआ वहीं ड्रिप से सिंचाई करने पर पानी की भी 50 फीसदी बचत हुई और फसल में उत्पादन भी अधिक मिला। ऐसे में यह किसानों के लिए फायदे का सौदा है।

डॉ. हरिओम ने बताया कि बैड्स पर प्लास्टिक मल्चिंग और ड्रिप इरिगेशन से सब्जियों की फसल लेने का यह आइडिया उन्हें वर्ष 2020 में एक किसान के खेत से मिला जिसमें कुछ और सुधार करके गुरुकुल के फार्म पर यह मॉडल तैयार किया गया है। हाल ही में गुजरात से जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के 50 वैज्ञानिकों का एक दल गुरुकुल में ट्रेनिंग हेतु आया, जब उन्हें यह मॉडल दिखाया गया तो वे भी इसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सके। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभी इस तकनीक में और सुधार किया जा रहा है जिसके बाद यह प्रयोग खेती के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी पहल के तौर पर देखा जाएगा।

– **रामनिवास आर्य**
व्यवस्थापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

आपकी सेहत के दोस्त विटामिन्स और मिनरल्स

विटामिन्स और मिनरल्स आपकी सेहत के दोस्त हैं। शरीर कई रोगों से ग्रस्त हो जाता है, लेकिन इनके संदर्भ में कुछ बुनियादी जानकारियां रखकर और इन्हें अपने खानपान में वरीयता देकर आपका स्वास्थ्य सदाबहार बना रह सकता है।

शरीर के लिए प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट आदि पोषक तत्त्व जरूरी है वैसे ही कुछ और पदार्थ आवश्यक हैं जिन्हें आवश्यक पोषक तत्त्व कहते हैं। ये पोषक तत्त्व दो प्रकार के होते हैं। पहला, विटामिन्स जो पौधों और जानवरों से प्राप्त होते हैं (आर्गेनिक खाद्य पदार्थ)। दूसरा, मिनरल्स जो इनआर्गेनिक (अकार्बनिक) साल्ट होते हैं।

विटामिन्स का महत्त्व- हमारे स्वास्थ्य और शारीरिक विकास के लिए विटामिन्स आवश्यक हैं, जो हमें कई बीमारियों से बचाते हैं। विटामिन शरीर को सुचारु रूप से संचालित करने हेतु जरूरी हैं।

विटामिन्स दो प्रकार के होते हैं-फैट सॉल्युबल विटामिन्स जैसे विटामिन- डी, ई, और के. जो शरीर में संचित किए जा सकते हैं। ये संचित विटामिंस कुछ समय तक शरीर की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। अगर लगातार हम कुछ समय तक ये पदार्थ नहीं खाते, तो शरीर में फैट सॉल्युबल विटामिन्स की कमी हो जाती है। फैट सॉल्युबल विटामिन्स अधिकतर हमें जानवरों से प्राप्त होते है। अगर शाकाहारी लोग संतुलित आहार ग्रहण न करें, तो इन विटामिनों की कमी होने का खतरा ज्यादा होता है।

वाटर सॉल्युबल विटामिन्स जैसे विटामिन बी. कॉम्पलेक्स और विटामिन-सी।

विटामिन-बी कॉम्पलेक्स बारह प्रकार के अलग-अलग विटामिन्स का एक समूह है, जो शरीर में ऊर्जा संबंधी जरूरत के अलावा और कई कार्य करते हैं। वाटर सॉल्युबल विटामिन्स को लगभग रोज लेना पड़ता है। ताजे फल और सब्जियां इनके मुख्य स्रोत हैं। थोड़े समय भी ताजा फलों और सब्जियां के न लेने से इन विटामिनों की कमी हो सकती है। इन विटामिन्स की शरीर में साधारणत: अधिकता नहीं होती, क्योंकि ज्यादा मात्रा में लेने पर ये पेशाब के द्वारा शरीर से बाहर निकल जाते हैं।

हमारे शरीर को विटामिन्स की आवश्यकता रोज होती है, पर कुछ विशेष अवस्थाओं में इनकी जरूरत कहींज्यादा बढ़ जाती है। जैसे -बढ़ते बच्चों में, बीमारी में और चोट लगने के बाद। गर्भावस्था के दौरान और वृद्ध लोगों में।

संतुलित आहार विटामिन के अच्छे स्रोत हैं, जिनमें फलों, सब्जियों, दूध को शामिल किया जाता है। डॉक्टर की सलाह से आप विटामिन सप्लीमेंट ले सकते हैं।

डॉ. देव आनन्द

विटामिन्स की कमी और रोग

विटामिन की कमी से होने वाले प्रमुख रोग, उनके लक्षण और इलाज इस प्रकार हैं :-

विटामिन ए की कमी से रतौंधी (रात को न दिखना), आंखों में सूखापन, अंधापन आना और त्वचा में सूखेपन की समस्या पैदा हो जाती है।

उपचार-इस विटामिन की कमी को दूर करने के लिए विटामिन ए का सप्लीमेंट लें। विटामिन ए के स्रोत-पीले रंग के फल व संतरा लें। इसी तरह सब्जियों में गाजर, आम, पपीता, पेठा और दूध लें।

विटामिन बी (बी कॉम्पलेक्स)की कमी के दुष्प्रभाव-सांस फूलना, शरीर के किसी भाग पर सूजन आना, बेहोश होना, मुंह में छाले पड़ना और त्वचा में सूखापन महसूस होना। इसके अलावा दस्त लगना, पैरों में सुन्नपन आना, खून की कमी होना, याददाश्त कम होना।

विटामिन बी-कॉम्पलेक्स के स्रोत-हरी सब्जिया, अंकुरित चने, मूंग दाल, केला, मशरूम, मेवे, दूध, दही आदि में यह विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

विटामिन डी की कमी से बच्चों में रिकेट्स और वयस्कों में ऑस्टियो मेलेशिया (हड्डियों का कमजोर होना) आदि रोग होते हैं।

लक्षण-बच्चों के पैरों की हड्डियों में टेढ़ापन आना, कलाई की हड्डी का चौड़ा होना। वयस्कों में हाथ-पैरों में दर्द होना, मांसपेशियों में दर्द होना और हड्डियों का कमजोर होना।

विटामिन डी के स्रोत-मशरूम में यह पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। सुबह की धूप में 30 से 40 मिनट बैठने से भी त्वचा के जरिये शरीर को विटामिन डी प्राप्त होता है। हरी सब्जियां, अंकुरित चने, मूंग दाल, केला, मशरूम, मेवे, दूध और दही।

विटामिन सी की कमी से मसूढ़ों से खून आना, मुंह में लालिमा, शरीर पर लाल निशान, घाव का ठीक न होना, दांत गिरना आदि लक्षण पाये जाते हैं।

विटामिन सी के स्रोत-ताजे रसीले फल व सब्जियां, आंवला।

विटामिन ई और के की कमी से महिलाओं में गर्भपात होने का खतरा बढ़ जाता है। इसी तरह विटामिन के की कमी से रक्त के जमने में परेशानियां आ सकती हैं जिससे हल्की-सी चोट लगने पर खून बहना जल्द बंद नहीं होता।

-डॉ. देव आनन्द मुख्य चिकित्सा अधिकारी
स्वामी श्रद्धानन्द योग, आयुर्वेदिक एवं प्राकृतिक चिकित्सालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

जीवन कला के प्रणेता 'श्रीकृष्ण'

जयपाल आर्य

भगवान् श्रीकृष्ण के अनुसार सर्वदा आनन्दित रहने का राज है-फलाकांक्षा से रहित हो जाना किन्तु यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि व्यावहारिक स्तर पर कैसे सम्भव है कि कोई कर्म करे और फल की इच्छा न हो? आम का पेड़ लगाने वाले की आम्र फलों की प्रतीक्षा स्वाभाविक प्रतीत होती है। ऐसी स्थिति में कर्म और फल की इच्छा का अभाव दोनों एक साथ कैसे सम्भव है? कैसे सम्भव है कि व्यक्ति पुरुषार्थ करे और परिणाम की प्रतीक्षा उसकी आंखों में न हो? कृष्ण के अनासक्त-कर्मयोग को समझने के लिए इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को समझना होगा कि हमें फल की आकांक्षा क्यों रहती है? मनुष्य की अधिकतम ऊर्जा स्वप्न सँजाने में व्यस्त रहती है। भविष्य के प्रति उत्कण्ठा ही फल-आसक्ति है और वर्तमान में स्थित हो जाना ही फल-अनासक्ति है।

दरअसल, व्यक्ति जब वर्तमान से असन्तुष्ट होता है तभी वह भविष्य में उत्पन्न होने वाले फलों की राह देखता है किन्तु जैसे ही किसी के वर्तमान क्षण उत्सवमय होते हैं, पूर्णतृप्ति से भरते हैं तो वैसे ही उसका भविष्य खो जाता है। यथा कोई उल्लासपूर्ण नृत्य कर रहा है अथवा संगीत रस में डूबा है, उन क्षणों में उस व्यक्ति का कोई भविष्य नहीं होता है।

क्षण-क्षण की भंगिमा क्षण-क्षण में उभरते स्वरों तक ही जीवन सिमट जाती है। भगवान् श्रीकृष्ण के कर-कमलों में उनके अधरों को स्पर्श करती बाँसुरी और नृत्य मुद्रा इसी बात का प्रतीक है कि उनका एक-एक क्षण उल्लास, आनन्द से परिपूर्ण है। वे अभी, इसी वक्त इतने उल्लसित हैं, नित्यतृप्ति से भरे हैं कि भविष्य की बात ही खो जाती है और जैसे ही भविष्य खोता है कृष्ण का कर्मयोग उपस्थित हो जाता है।

यहाँ ध्यान देने योग्य तात्त्विक तथ्य यह है कि आनन्द के स्रोत का आधार केवल संगीत अथवा नृत्य ही नहीं है अपितु कोई भी, कैसा भी कर्म उत्सव की श्रेणी में आ सकता है। कोई भी क्रिया संगीत बन सकती है, किसी भी कर्म में नृत्य प्रकट हो सकता है। पढ़ना, पढ़ाना, झाड़ू लगाना, बर्तन साफ करना, कार ड्राइव करना किसी भी छोटे-बड़े कर्म से आनन्द उपजाया जा सकता हैं कर्म से जब आप पूरी तरह से सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ जुड़ते हैं तो कर्मयोग उपस्थित हो जाता है। माना कोई नन्हा-सा गुलाब का पौधा अपने बगीचे में रोप रहा है। अब दो सम्भावनाएं हैं या तो वह वर्तमान क्रियाओं के प्रति उपेक्षित-सा केवल पौधे के सुखद भविष्य के विषय में ही चिन्तित हो सकता है।

द्वितीय सम्भावना यह हो सकती है कि गुलाब के नन्हे पौधे का रोपना ही किसी के लिए उत्सव बन जाए। खाद मिलाने, खुरपी से गुड़ाई करने, मिट्टी को प्रेमपूर्ण हाथों से थपथपाने और पौधों की नन्ही पत्तियों को फुव्वारेदार जलधारा से सींचने इन सब क्रियाओं में इतना आनन्दित, उल्लसित है कि भविष्य का कोई विचार ही नहीं है या कहीं विचार ही नहीं है केवल क्रिया मात्र है।

दरअसल, विचारक्रिया अथवा मस्तिष्क की सक्रियता अशान्त चित्त से उपजती है। जब पूर्ण शान्ति, पूर्ण तृप्ति का अनुभव हो रहा है, तब विचारतन्तु निष्क्रिय हो जाते हैं। स्थूल उदाहरण लें माना कोई युगल दीर्घ अन्तराल के बाद आपस में मिल रहा है। इस मिलन के प्राथमिक क्षणों में चित्त जितना तृप्ति से भरा होगा, मस्तिष्क उतना ही विचार शून्य होगा। कर्मों में कर्ता की जब पूरी उपस्थिति होती है तब कर्त्तव्यभाव विलीन हो जाता है।

कर्म के प्रति तल्लीनता जैसे-जैसे बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे जीवन में कृष्ण का अवतरण होता जाता है। लौकिक स्तर पर भी राग-द्वेष, दोनों का अस्तित्व समाप्त होता जाता है। पूरे महाभारत युद्ध में कृष्ण भगवान् एकाकी ऐसे व्यक्तित्व हैं जो व्यक्तिगत राग-द्वेष से रहित हैं। यदि वे पाण्डवों की ओर से लड़े थे तो कौरवों को अपनी सेना लड़ने के लिए दी थी।

भगवान् कृष्ण की सम्पूर्ण जीवन चर्या पर विहंगम दृष्टि डालें तो दो बातें स्पष्ट उभरकर आती हैं। प्रथम किसी भी कर्म के प्रति पूरा ईमानदार होना, चाहे सुदर्शन चक्र का संचालन हो अथवा युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ में अभ्यागत विद्वानों का पाद-प्रक्षालन। द्वितीय, अनावश्क गंभीर न होना। हर कार्य सहजता से अंजाम देना। वे शिशुपाल के वध के समय भी सहज हैं और दुर्योधन के पास सन्धि-प्रस्ताव ले जाने पर कौरव-भ्राताओं द्वारा अपमान भरे शब्दों को सुनते हुए भी शान्त हैं। भूमण्डल के इतिहास में सबसे बड़े युद्ध महाभारत में भगवद्गीता के रूप में दिव्य गीत का प्रकट होना उनकी परम सहजता का प्रतीक है।

बिना कर्मों को करे, किसी की जीवन यात्रा नहीं चल सकती इसलिए जीवन के लिए कर्म अनिवार्य शर्त है। विविध कर्मो के सम्पादन में उलझनों एवं झंझटों का होना भी लाजिमी है। जो श्रीकृष्ण भगवान् के कर्मयोग को आत्मसात् कर लेते हैं, उनके लिए कर्मगत झंझटें भी खेल बन जाती हैं। वे हर मुश्किल का लुत्फ लेना भी सीख जाते हैं।

-महाशय जयपाल आर्य
वरिष्ठ भजनोपदेशक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

फार्मा मार्केटिंग में हैं अपार संभावनाएं

प्रकाश जोशी

फार्मा मैनेजमेंट एवं फार्मा मार्केटिंग के क्षेत्र में काम करने वालों को मानव शरीर और दवा में इस्तेमाल होने वाले रासायनिक तत्त्वों की सम्यक् जानकारी होना जरूरी है इसमें अतिरिक्त दवा की मार्केटिंग में सीधे-सीधे उपभोक्ताओं से संपर्क न करके डॉक्टरों को संतुष्ट किया जाता है क्योंकि डॉक्टरों की सलाह पर ही उपभोक्ता दवा खरीदते हैं।

दवा के क्षेत्र में मार्केटिंग और मैनेजमेंट में करियर बनाना है तो जरूरी है चिकित्सा क्षेत्र की उम्दा जानकारी होना और उससे भी अहम है मैनेजमेंट, चिकित्सा और दवा, तीनों की पर्याप्त जानकारी होना। चिकित्सा क्षेत्र में ऐसे कार्यों को अंजाम दिया जा सके, इसी के मद्देनजर कई विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में फार्मा मैनेजमेंट एवं फार्मा मार्केटिंग पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं।

भले ही अध्ययन का यह क्षेत्र बिल्कुल नया है लेकिन इसमें रोजगार की संभावनाओं की कोई कमी नहीं है। इस क्षेत्र में काम करने वालों को मानव शरीर और दवा में इस्तेमाल होने वाले रासायनिक तत्त्वों की अच्छी जानकारी होना जरूरी है। इसमें अतिरिक्त दवा की मार्केटिंग में सीधे-सीधे उपभोक्ताओं से संपर्क न करके डॉक्टरों को कन्वेन्स किया जाता है। इस काम को अंजाम देने के लिए आप में कम्युनिकेशन स्किल्स होना जरूरी है, साथ ही, दवाइयों के इस्तेमाल से जुड़े विपरीत असर को पहचानना और उसकी पुष्टि कर असर को मापना होता है, ताकि दवाइयों को ज्यादा सुरक्षित और उपयोगी बनाया जा सके।

योग्यता और पाठ्यक्रम

देश के कुछ संस्थानों में फार्मा बिजनेस मार्केटिंग के पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। कुछ संस्थानों में फार्मा बिजनेस मैनेजमेंट में एमबीए और बीबीए कोर्स शुरू हो गए हैं। इसके साथ-साथ स्नातकोत्तर डिप्लोमा इन फार्मास्यूटिकल एवं हेल्थकेयर मार्केटिंग,

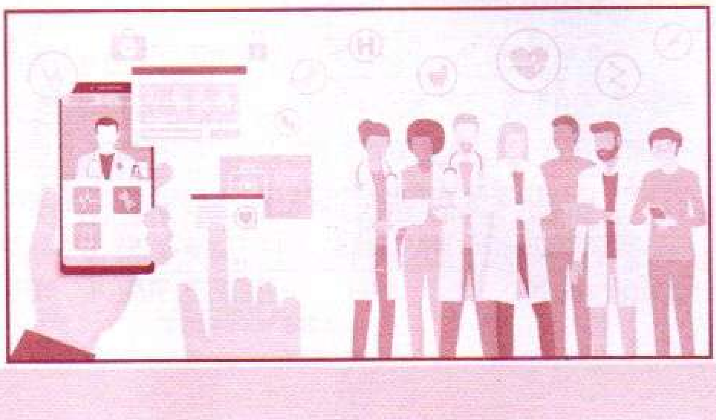

डिप्लोमा इन फार्मा मार्केटिंग एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन फार्मा मार्केटिंग कोर्स भी उपलब्ध है। डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि छह माह है। इनमें प्रवेश के लिए अनिवार्य योग्यता 12वीं (विज्ञान) उत्तीर्ण होना जरूरी है।

पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि एक साल है। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी को न्यूनतम योग्यता बीएससी के साथ ही बी. फार्मा है। 12वीं (गणित और जीव विज्ञान) के बाद फार्मा बीबीए (फार्मा बिजनेस) में दाखिला लिया जा सकता है। यह तीन वर्षीय स्नातक स्तर का पाठ्यक्रम है।

अवसर-आईईसी यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. नवीन गुप्ता के मुताबिक, एमबीए पाठ्यक्रम के बाद छात्रों को एरिया मैनेजर, सर्किल मैनेजर, प्रोडक्ट मैनेजर, क्वालिटी कंट्रोल मैनेजर, ब्रांड मैनेजर या मैनेजमेंट ट्रेनी के रूप में बहाली हो सकती है। बीबीए इन फार्मा तथा डिप्लोमा कोर्स के बाद मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव, प्रोडक्ट एक्जीक्यूटिव, मेडिकल रिप्रजेंटेटिव, बिजनेस एक्जीक्यूटिव आदि के रूप में नियुक्ति होती है। इस क्षेत्र में रोजगार प्रदान करने वाली कई प्रमुख कंपनियां हैं- रैनबैक्सी, ग्लेक्सो, सन फार्मा, फाइजर, सिप्ला, निकोलस पिरामल आदि। ये कंपनियां बड़ी संख्या में रोजगार देती हैं। वैसे भी रोजगार मुहैया कराने में फार्मा सेक्टर बहुत आगे है।

आमदनी का स्रोत

सामान्य तौर पर शुरुआती वेतन 20 से 30 हजार रुपए तक है लेकिन तजुर्बे के आधार पर आमदनी में इजाफा होता रहा है। मैनेजमेंट, चिकित्सा और दवा की बेहतर जानकारी है तो वारे-न्यारे, कुछ साल का अनुभव हासिल करने के बाद 50 से 60 हजार रुपये प्रतिमाह आसानी से हासिल की जा सकती है। हिन्दुस्तान से बाहर भारतीय कर्मियों की खूब डिमांड है। वहां बेहतर पैकेज मिल जाता है। अगर आपने किसी फार्मास्युटिकल कंपनी में दो या तीन साल का अनुभव हासिल कर लिया है तो वेतन कई लाख भी मिल सकता है।

प्रमुख संस्थान

दिल्ली इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंस एंड रिसर्च, नई दिल्ली, इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, पुणे, आईईसी यूनिवर्सिटी, बद्दी, हिमाचल प्रदेश, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल एजुकेशन, मोहाली, चंडीगढ़ आदि में फार्मा संबंधी कोर्स करवाये जाते हैं। **- प्रकाश जोशी**

कॅरियर कंसल्टेंट, जिनेसिस क्लासिज

नचिकेता के तीन वरदान

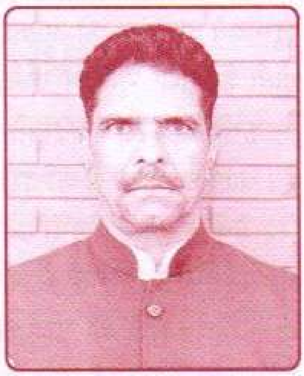

आचार्य दयाशंकर

गतांक से आगे...जैसे श्रीकृष्ण जी ने गीता में कहा है: -

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचार: स उच्यते।।

(गीता अध्याय 03, श्लोक 6)

अर्थात् ये लोक हाथ, पैर आदि कर्मेन्द्रियों को संयमित करके आसन जमाकर बैठ जाते है और मन में इन्द्रियों के अर्थों, भौतिक भोग पदार्थों का चिन्तन करते जिसे बगुला भगत भी कहा जा सकता, ऐसा व्यक्ति मिथ्याचारी कहलाता है, ऐसे पुरुष को अनित्य से नित्य ब्रह्म की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती। दूसरे वे लोग जो यज्ञादि कर्मकाण्ड प्रकृया के परोक्ष में उसका सार भूत अर्थ ज्ञान की प्राप्ति कर लेते हैं, वे लोग भौतिक अग्नि के माध्यम से अन्तर्निहित वेद ज्ञान अग्नि को प्रकट करते है, वे लोग यज्ञ की समिधाओं को प्राण की समिधा बना लेते हैं-'**समिधा वै प्राणा: मन: वै आज्यं**' मन को घृत (आज्यं) बनाकर उसकी अर्थात् प्राण और मन की आहुति बुद्धिरूपी अग्नि को समर्पित करके बुद्धि को प्रकाशित करते हैं।

ऐसे दिव्यगुण सम्पन्न लोग देवों की श्रेणी में आते हैं ऐसे देव पुरुषों के विषय में गोपथब्राह्मण के ऋषि कहते हैं:-

परोक्षप्रिया इव वै देवा: प्रत्यक्षद्विष:

अर्थात् देव लोग तो क्रिया कलाप के पीछे जो परोक्ष छिपा होता है, उसके उपासक होते हैं, स्थूल दृष्टि से दृश्यमान कर्मकाण्ड के नहीं, आचार्य यम कहते हैं, इसीलिए मैंने यज्ञ की अग्नि को '**इदन्न मम**' अर्थात् निष्काम भाव से चुना है, इस यज्ञाग्नि के परोक्ष में जो नित्यरूप आत्मप्रकाश छिपा है, उसी नित्य को मैंने अनित्य अग्नि से प्राप्त किया है।

इसी प्रकार दिव्य भावयुक्त देव लोग '**स्वाहा**' शब्द के परोक्ष में समर्पण तथा '**इदन्न मम**' के परोक्ष में छिपे निष्काम कर्म से मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार अनित्य द्रव्यों के परोक्ष में छिपे नित्य ब्रह्म को प्राप्त किया जाता है। अग्नि एक पदार्थ है, उस अग्नि का उपयोग अति सामान्य स्तर के लोग जीवन पर्यन्त चूल्हे में जलाकर मात्र पेट भरने के लिए करते हैं या ठंड से बचने के लिए हाथ सेंकने तक सीमित है, उससे आगे उनकी पहुंच नहीं है।

वहीं वैज्ञानिक चिन्तन, मनन के द्वारा अग्नि का गहन अध्ययन करके तथा अग्नि के सूक्ष्म तत्त्व को समझकर अनेक प्रकार के विमानों का निर्माण करके उसी अग्नि द्वारा राष्ट्र की समृद्धि में अपना योगदान देते हैं और राष्ट्र को शक्तिशाली बनाते हैं। फिर एक वे देवपुरुष इसी नचिकेत अर्थात् यज्ञादि पवित्र कर्मकाण्डों द्वारा परोक्षरूप में उन विधाओं को जानकर मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं।

अग्नि वही है किन्तु स्तर एवं सोच के अनुसार उपयोग अलग-अलग है। जब यमादि अष्टांग योग की बात आती है उसमें प्रथम पांच अंग तो अनित्य शरीर द्वारा ही सिद्ध करने होते हैं जिसमें मनादि भौतिक (प्राकृतिक) अन्त:करण सम्मिलित है, उन्हीं से गुजर कर अन्तिम स्थिति समाधि में प्रवेश होता है।

कहा भी गया है-'**शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्**' अर्थात् शरीर धर्म के कार्यों का साधन है। मन पर विजय प्राप्त कर विवेकतापूर्ण बुद्धि द्वारा उचित दिशा की ओर बढ़ा जाए तो यही प्राकृतिक भौतिक मन मुक्ति का साधन बनकर परम ब्रह्म की प्राप्ति करा देता है। '**मन एव कारणं बन्धमोक्षयो:**' अर्थात् यह मन: कारणरूप बन्धन तथा मुक्ति का साधन है।श्रीकृष्ण मन को समाधि का अधिष्ठान मानते हैं :-

'इन्द्रियाणिमनोबुद्धि:'

(गीता अध्याय 03, श्लोक 40)

नचिकेतग्नि जो यम आचार्य कह रहे हैं वह निश्चयपूर्वक विवेक ज्ञान तथा निष्काम यज्ञ (कर्म) है अब इससे नित्य, ध्रुव ब्रह्म कैसे प्राप्त हो सकता है। इसका वर्णन गीता में है: -

तस्मादसक्त: सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुष:।।

(गीता अध्याय 03, श्लोक 19)

अर्थात् कुशलतापूर्वक आसक्ति रहित होकर कर्म करो क्योंकि निष्काम भाव तथा यज्ञभाव से किया हुआ कर्म किया नहीं जाता स्वाभाविक होता है। जैसे प्राण, श्वास लिया नहीं जाता स्वाभाविक प्रक्रिया है, ऐसा कर्म दग्ध बीज होता है और जब बीज ही दग्ध हो गया तो फल की संभावना ही कहां ?

'**नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्**' उस अवस्था में यम आचार्य कहते हैं-'**अनित्यै: द्रव्यै: प्राप्तवानस्मि नित्यम्**' कि इन अनित्य द्रव्यों (साधनों) से ही मैंने (यम) नित्य ब्रह्म को प्राप्त किया है। हम सामान्य लोग बड़ी भूल करते हैं कि जो-जो साधन रूप जगत् है, उसे ही साध्य मानकर उसी में उलझे रहते हैं, परिणाम ये होता है कि विपरीत मार्ग पर चलकर जीवन के मूल उद्देश्य से भटककर खो जाते हैं। जैसे एक विशाल मेले में अनेक प्रकार के चकाचौंध

लुभावने तथा मन को आकर्षित करने वाले खिलौनों से दुकानें सजी होती हैं, उसी मेले में एक नन्हा बच्चा तथा उसका पिता दो ही आकर्षक दुकानों को देखते हैं किन्तु दोनों का दृष्टिकोण बहुत भिन्न है। बालक खिलौनों को देखकर आकर्षित होता है जबकि पिता उन खिलौनों के आकर्षण से ऊपर उठ चुका है। पिता का लक्ष्य सुरक्षित घर पहुंचना है। गलती से बालक के हाथ से पिता का हाथ छूट जाए तो निश्चित मेले की भीड़ में गुम हो जाने की संभावना है और यदि पिता हाथ सावधानी से पकड़े रहे तो मेले में आनन्दपूर्वक घूमकर सायंकाल तक अपने घर में सुरक्षित लौट आएगा।

हमारी स्थिति भी कुछ इसी प्रकार है, यदि परम पिता परमेश्वर का हाथ पकड़ा है तो संसार रूपी मेले में घूमकर पिता के साथ सुरक्षित घर अर्थात् अंतिम लक्ष्य ब्रह्मानन्द को प्राप्त कर लेगें और यदि असावधानी से पिता का हाथ छूट गया तो इस सांसारिक मेले में खो जाना निश्चित है। बालक दुकान में रखे खिलौने छीनता है, न मिले तो रोता है, जबरदस्ती अपना अधिकार समझ लेता है और जब दुकान मालिक खिलौना वापिस लेता है तो बहुत रोता है जबकि खिलौना उसका नहीं है, मान बैठा है कि मेरा है। यजुर्वेद ऐसे बालबुद्धि लोगों के लिए उपदेश करता है:-

ईशावास्यमिदं सर्वं यात्किञ्च जगत्यांजगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

अर्थात् जो भी पदार्थ इस सम्पूर्ण जगत् में दृश्य अथवा अदृश्य रूप में विद्यमान है, वे सब ईश्वर से अच्छादित तथा उसी परम पिता द्वारा प्रदत्त हैं। अत: हे मानव! तू इस परमेश्वर द्वारा प्रदत्त भोग सामग्री को त्याग-भाव से भोग, किसी के धन पर गिद्ध की दृष्टि मत डाल अर्थात् लोभ, लालच मत कर। इस प्रकार अनासक्त भाव से इन पदार्थों का भोग करने पर इनमें अलिप्त रहेगा और परमानन्द की प्राप्ति करेगा। वह ब्रह्म कैसा, कितना सूक्ष्म है? इसका वर्णन करते हुए आचार्य नचिकेता बताते हैं :-

अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।
तमक्रतु पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान्महिमानमात्मनः।।

अर्थात् वह ब्रह्म अणु अर्थात् अति सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, ये समझे कि अणु से भी सूक्ष्म परमाणु होता है किन्तु वैज्ञानिकों ने जब परमाणुओं पर गहन अध्ययन और विश्लेषण किया तो पाया कि परमाणु भी तीन टुकड़ों में बट जाता है, विखण्डित हो जाता है। उन विखण्डित भाग का नाम इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन और प्रोटॉन दिया।

सूक्ष्म अणु से सूक्ष्म परमाणु, उससे भी सूक्ष्म परमाणु के विखण्डित भाग इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन और प्रोटॉन और इन विखण्डित

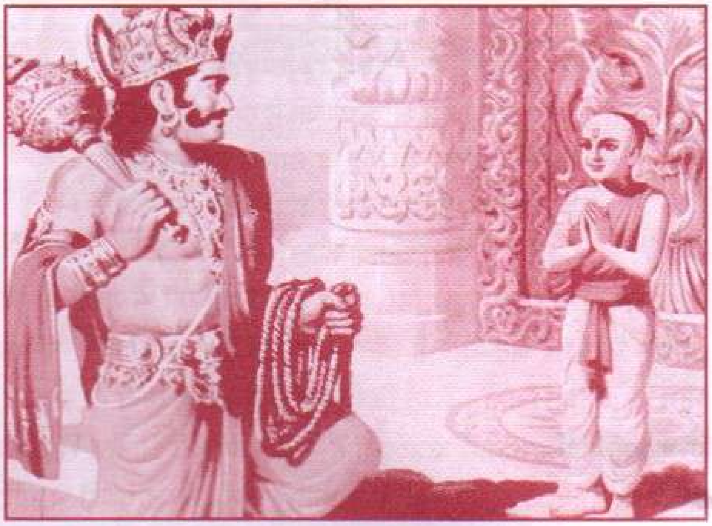

भागों से भी अति सूक्ष्म क्योंकि कोई भी पदार्थ अपने से स्थूल पदार्थ में प्रवेश कर पाता है और वहीं से उनका नियमन करता है, तो इन विखंडित परमाणुओं को जो गति प्रदान कर रहा है, वह उनके भी अन्दर प्रविष्ट हुआ है, तभी परमाणुओं में गति है क्योंकि प्रकृति तो जड़ है। जड़ पदार्थों में स्वाभाविक गति नहीं हो सकती कोई अदृश्य शक्ति है जो गति प्रदान करती है, वही ब्रह्म है जो अति सूक्ष्मतम् परमाणु के अन्दर प्रविष्ट होकर इस जड़ प्रकृति को गति प्रदान करता है।

इस उपनिषद् वाक्य से प्रतिमा पूजन (मूर्तिपूजा) का पूर्ण समर्थन के साथ विरोध है। मूर्ति अत्यन्त स्थूल है, भौतिक बाह्य चक्षुओं से साफ-साफ नजर आती है तो सूक्ष्म तक ब्रह्म रूप परमेश्वर का विरोध हो रहा हैं, एक ओर कहते हो-**'तुम हो एक अगोचर'** अर्थात् गोचर जो इन्द्रियों से साक्षात् किया जा सके, देखा जा सके, सुना जा सके और इससे विपरीत अगोचर जो देखा भी न जा सके, सुना भी ना जा सके किन्तु मूर्ति को तो देख रहे हैं तो गोचर मूर्ति अगोचर कैसे हो सकती है? इसका अर्थ है कि अपनी मान्यता का अपने आप विरोध कर रहे है, विरोध सत्य का नहीं होता, असत्य का ही होता है तो ईश्वर को गोचर मानना असत्य हुआ और असत्य को कोई सार्थक अर्थ नहीं हो सकता। मूर्तिपूजक असत्य की नींव पर खड़े हैं, अत: वास्तविक पूजा-पाठ के फल से वंचित रहते हैं।

यजुर्वेद में इसका स्पष्ट विरोध किया गया है:-

'न तस्य प्रतिमा अस्तिः' यजु0 अध्याय 32, मंत्र 3

अर्थात् उस परमेश्वर की मूर्ति नही हो सकती। स्थूल पदार्थ मूर्तरूप होता है, सूक्ष्म नहीं। तो वह ब्रह्म अणु से भी अति सूक्ष्म तथा सर्वव्यापक होने से महान् से महान् सूर्य चन्द्र नक्षत्र आदि महत्तम पदार्थों से अति महान् है क्योंकि वेद मंत्र कहता है-हिरण्य गर्भ समवर्तताग्रे..' (यजुर्वेद अध्याय 13, मंत्र 4) ....क्रमशः

-आचार्य दयाशंकर संस्कृत विभागाध्यक्ष, गुरुकुल

ऋषि और आचार्य के लक्षण

शिवम् शास्त्री

भाषा हमारे विचारों को दूसरों तक पहुंचाने का एक प्रबल साधन है, कई बार हमारे शब्द दूसरों लोगों को बहुत अच्छे लगते हैं तो कई बार हम दूसरे लोगों के लिए कटु शब्दों का भी प्रयोग करते हैं जो किसी को भी पसंद नहीं, अत: प्रयास करें कि हमेशा ऐसे शब्दों का प्रयोग करें जिससे दूसरे व्यक्ति को कोई दिक्कत या परेशानी न हो।

वर्तमान में हमारे समाज में एक प्रचलन काफी बढ़ता जा रहा है। यहां हर दूसरे व्यक्ति को आचार्य या किसी भी व्यक्ति को ऋषि की संज्ञा दी जाने लगी है। कोई व्यक्ति मात्र कुछ पुस्तकों का अध्ययन कर लेता है और स्वयं को आचार्य कहलाना शुरू कर देता है। जबकि केवल विद्वता के आधार पर कोई 'आचार्य' पदवी का हकदार नहीं बन जाता, इसके लिए उसके चरित्र और व्यक्तित्व में भी दिव्य गुणों का होना आवश्यक है। ऐसा ही कुछ 'शास्त्री' के लिए होता है। किसी व्यक्ति को थोड़ा-बहुत संस्कृत का ज्ञान हुआ और लगा स्वयं को शास्त्री कहलाने, यह कतई उचित नहीं है।

अब ऋषि शब्द को ले लीजिए। वर्तमान में बहुत से लोगों को तो ऋषि शब्द का सही अर्थ भी पता नहीं होगा, इसके महत्त्व की तो बात ही छोडिए। ऋषियों का दिव्य आचरण, उनका मार्गदर्शन, उनका विचार, उनकी शिक्षा-दीक्षा, उनका तप, आज के युवा क्या समझेंगे।

हर किसी को महापुरुष, आचार्य वा ऋषि नहीं कहा जा सकता, वा माना जा सकता है। अज्ञानता में इन शब्दों का दुरुपयोग वा मिथ्या प्रयोग होते प्राय: देखा जाता है। शास्त्र तो 'साक्षात्कृतधर्मा' जिसे धर्म का साक्षात्कार हो, उसे ही ऋषि कहता है। जिसको जिस विषय का साक्षात् ज्ञान है, वह उस विषय का ऋषि कहाता है। वैदिक साहित्य में तो 'ऋषिर्दर्शनात् स्तोमान् ददर्श' (निरुक्त 2/11) मन्त्रार्थद्रष्टा ऋषि है। संसार को मार्ग दर्शाने वाले को ऋषि कहते हैं। महामुनि पतंजलि महाभाष्य में 'ऋषिर्वेदे पठति श्रृणोत ग्रावाण:' में 'ऋषिर्वेद:' वेद को ही ऋषि बतलाते हैं।

'आचार्य' शब्द यद्यपि ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तीनों में नहीं पाया। वेद 11/5 ब्रह्मचर्यसूक्त में 'आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं वृणुते गर्भमन्त' (अथर्ववेद 11/5/3) 'आचार्य' का जो निरूपण कियां गया है, उसके आधार पर ही सभी धर्मशास्त्रों ने आचार्य का लक्षण प्राय: समान ही किया है -

उपनीय तु य: शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विज:।
सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्य प्रचक्षते।।

(मानवधर्मशास्त्र 2/140)

इसका यही अभिप्राय है कि जो 8 वर्ष से लेकर कम से कम 25 वर्ष की आयु तक बालक के आचार-व्यवहार तथा उसके समस्त ज्ञान-विज्ञान का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले, संकल्प और सरहस्य वेद का अध्ययन करावे, वही 'आचार्य' कहाता है। यास्कमुनि ने भी 'आचार्य' का लक्षण निम्न प्रकार किया है -

आचार्य: कस्मात्? आचारं ग्राहयति, आचिनोत्यर्थान्।
आचिनोति बुद्धिमिति वा।। (निरुक्त अ0 1/4)

जिसका भाव भी यही है, जो ऊपर कहा गया है। नवीन युग वा नव भारत के निर्माता ऋषि दयानन्द 'आचार्य' का लक्षण करते हैं-'आचार्य उसको कहते हैं जो सांगोपांग वेदों के शब्द, अर्थ, संबंध और क्रिया का जाननेहारा, छल-कपट रहित, अतिप्रेम से सबको विद्या का दाता, परोपकारी, तन-मन और धन से सबको सुख बढ़ाने में जो तत्पर, महाशय, पक्षपात किसी का न करे और सत्योपदेष्टा, सबका हितैषी, धर्मात्मा, जितेन्द्रिय हो।'

(संस्कारविधि, उपनयन संस्कार)

आचार्य पदवी कितनी पवित्र, उच्च, उत्तरदायित्वपूर्ण है, यह पाठक स्वयं विचार सकते हैं। सुगन्ध वह है, जिसे नासिका इन्द्रिय कहे, न कि वह जो उसका बेचनेवाला कहे। इसी प्रकार 'आचार्य' की सुगन्ध उसके अपने जीवन से ही मिलती है, न कि स्वयं कहने से या कहलाने से। उपयुक्त लक्षणों से युक्त आचार्य और ऋषि ही मानव-जाति को ऊंचा उठा सकते हैं। ऐसे महापुरुषों के विना मानवीय जीवनरूपी नौका निर्दिष्ट वा अभीष्ट स्थान पर पहुंचेगी, इसमें सन्देह ही बना रहेगा। अतएव मानवीय जीवन की सफलता वा लक्ष्यपूर्त्ति का एकमात्र साधन ऋषियों द्वारा निर्दिष्ट 'आर्ष' मार्ग व प्रणाली का अवलम्बन है।

मानव समाज सदा ही दु:ख, अशान्ति, परस्पर-विरोध, विद्वेष स्वार्थपरता, परहितहानि और विक्षुब्धता की भावनाओं से निरन्तर ओत-प्रोत रहेगा, जब तक ऋषियों द्वारा निर्दिष्ट आर्ष मार्ग वा प्रणाली का आश्रयण नहीं करेगा, क्योंकि 'सत्यं वै देवा:, अनृतं मनुष्या:' (शतपथ) देव, ऋषि लोग ही पूर्णज्ञानी, निरपेक्ष, सत्यनिष्ठ, निरीह, सर्वकाल परहित में रत होते हैं, मनुष्य में तो कुछ न कुछ न्यूनता बनी ही रहेगी। ये सब भाव 'ऋषि' और 'आचार्य' शब्दों में अन्तर्निहित हैं, यही हमको कहना है। - **शिवम् शास्त्री**

आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

क्या इस जन्म से पहले हमारा अस्तित्व था?

मनमोहन आर्य

हम कौन हैं? इस प्रश्न पर जब हम विचार करते हैं तो इसका उत्तर हमें वेद एवं वैदिक साहित्य में ही मिलता है जो ज्ञान से पूर्ण, तर्क एवं युक्तिसंगत तथा सत्य है। उत्तर है कि हम मनुष्य शरीर में एक जीवात्मा के रूप में विद्यमान हैं। हमारा शरीर हमारी आत्मा का साधन है। जिस प्रकार किसी कार्य को करने के लिये उसके लिये उपयुक्त सामग्री व साधनों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार हमारी आत्मा को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये यह मनुष्य शरीर मिला है। शरीर केवल सुख व दु:ख भोगने का ही आधार नहीं है अपितु यह जीवात्मा के साध्य ईश्वर की प्राप्ति के लिये है जिसे साधना के द्वारा प्राप्त व सिद्ध किया जाता है।

हमारे जीवन का लक्ष्य वा साध्य ईश्वर को जानना, उसे प्राप्त करना, उसका साक्षात्कार करना तथा सद्कर्मों को करके जन्म व मरण के बन्धनों से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त करना है। मोक्ष जीवात्मा की दु:ख रहित तथा आनन्द से पूर्ण अवस्था का नाम है। मोक्ष में जीवात्मा को लेशमात्र भी दु:ख नहीं होता। वह आनन्द से युक्त रहती है। सुखपूर्वक समय व्यतीत करती है। उसे वृद्धावस्था प्राप्त होने, किसी प्रकार का रोग व दुर्घटना होने तथा मृत्यु व पुनर्जन्म का दु:ख नहीं सताता। उसे नरक व नीच योनियों में जन्म लेने की चिन्ता भी नहीं सताती। मोक्ष अवस्था में सभी जीव ज्ञान व बल से युक्त रहते हैं जिससे वे दु:खों से मुक्त तथा सुखों व आनन्द से युक्त रहते हैं।

परमात्मा व मोक्ष ही जीवात्मा के लिये साध्य है जिन्हें जीवात्मा मनुष्य जन्म लेकर वेदाध्ययन व वेदज्ञान को प्राप्त कर तथा वेदानुकूल कर्मों को करके सिद्ध व प्राप्त करती है। शरीर न हो और यदि वेदज्ञान व ऋषियों के ग्रन्थ न हों, तो मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को न तो जान सकता है और न ही प्राप्त कर सकता है अत: जीवात्मा को मानव शरीर परमात्मा की अनुकम्पा व दया के कारण मिला है जो हमारे माता-पिता के समान व उनसे कहीं अधिक हमारे हितों का ध्यान रखते हैं व हमें सुख प्रदान कराते हैं। इस कारण से मनुष्यों के लिये केवल सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, अनादि, नित्य, दयालु एवं न्यायकारी परमात्मा ही उपासनीय, ध्यान, चिन्तन व जानने योग्य है। जो मनुष्य इसके लिये प्रयत्न नहीं करता उसका जीवन व्यर्थ एवं निरर्थक बन कर रह जाता है।

हम शरीर नहीं अपितु एक चेतन जीवात्मा हैं, इसका अनुभव प्रत्येक मनुष्य करता है। भाषा के प्रयोग की दृष्टि से भी आत्मा व शरीर की पृथक्-पृथक् सत्तायें सिद्ध होती हैं। हम कहते हैं कि हमारा शरीर, मेरा हाथ, मेरा सिर, मेरी आंख आदि आदि। मैं व मेरा में अन्तर होता है। मैं मेरा नहीं होता, मेरा शरीर मुझ आत्मा का है। अत: आत्मा व शरीर पृथक् हैं इसलिये हम शरीर के लिये मैं तथा आत्मा का प्रयोग न कर मेरा शरीर का प्रयोग करते हैं।

दूसरा प्रमाण यह है कि आत्मा एक चेतन सत्ता व पदार्थ है। हमारा शरीर व इसके सभी अंग जड़ वा निजह्रव हैं। शरीर की मृत्यु हो जाने पर शरीर क्रिया रहित व चेतना विहीन हो जाता है। शरीर को काटें या अग्नि में जलायें, उसको दु:ख नहीं होता परन्तु जीवित अवस्था में एक कांटा भी चुभे तो पीड़ा होती व आंख में आंसु आते हैं। इससे आत्मा नाम की शरीर से पृथक् सत्ता सिद्ध होती है जो शरीर में रहते हुए सुख व दु:ख का अनुभव करती वा कराती है व जिसके शरीर से निकल जाने अर्थात् मृत्यु हो जाने पर सुख व दु:ख की अनुभूति होनी बन्द हो जाती है अत: आत्मा को जानना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। इसको जानकर ही हम अपने कर्त्तव्यों के महत्त्व को समझ सकेंगे और ऐसा कोई काम नहीं करेंगे जिसका परिणाम दु:ख व सन्ताप हो।

वैदिक साहित्य में दु:ख के कारणों की चर्चा की गई है। इस जन्म में हमें जो दु:ख मिलते हैं वे हमारे पूर्वजन्म के वे कर्म होते हैं जिनका फल हम पिछले जन्म में भोग नहीं सके। कारण था कि भोग से पूर्व ही वृद्धावस्था व मृत्यु आ गई थी। इस जन्म में दूसरे प्रकार के दु:ख इस जन्म के क्रियमाण कर्मों के कारण भी होते हैं। एक व्यक्ति स्वार्थ व लोभवश चोरी करता है जिसका दण्ड उसे न्याय व्यवस्था से मिलता है। इससे उसे दु:ख होता है।

इसी प्रकार से जीवात्मा वा मनुष्य को आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक दु:ख भी होते हैं जो हमारे कर्मों पर आधारित न होकर देश, काल व परिस्थितयों पर आधारित होते हैं। इन सब प्रकार के दु:खों से बचने के लिये हमें वेदज्ञान की प्राप्ति कर सद्कर्मों यथा ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र देवयज्ञ, इतर पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ एवं बलिवैश्वदेवयज्ञ करने के साथ परोपकार व दान आदि को करना होता है। ऐसा करके हम भविष्य में कर्मों के कारण होने वाले दु:खों से बच सकते हैं।

हमारी आत्मा अनादि, नित्य, अविनाशी, अमर तथा सनातन

सत्ता है। यह सदा से है और सदा रहेगी इसलिये यह अनादिकाल से जन्म व मरण के बन्धनों में फंसती रहती है व मनुष्य जन्म प्राप्त कर साधना करके मुक्त होकर मोक्षावधि को प्राप्त होकर उसके बाद पुन: संसार में जन्म-मरण के चक्र में आवागमन करती रहती है। इस कर्म-फल रहस्य को वेद, सत्यार्थप्रकाश, उपनिषद् तथा दर्शन आदि ग्रन्थों को पढ़कर जाना जा सकता है। इन ग्रन्थों का अध्ययन करने से हम इस संसार सहित ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरूप से परिचित हो सकते हैं तथा दु:खों को दूर करने व भविष्य में अशुभ व पाप कर्मों के कारण होने वाले दु:खों से भी बच सकते हैं।

हमारी आत्मा अनादि व नित्य है। इस कारण से इसका अस्तित्व सदा से है और सदा रहेगा। आत्मा नाशरहित है। विज्ञान का नियम है कि अभाव से भाव तथा भाव से अभाव उत्पन्न नहीं होता। भाव पदार्थों में संसार में केवल तीन ही पदार्थ हैं। ये पदार्थ हैं ईश्वर, जीव एवं प्रकृति। इन तीन पदार्थों की कभी उत्पत्ति नहीं हुई। यह सदा से हैं और सदा रहेंगे। परमात्मा व जीवात्मा अपने स्वरूप से अविकारी पदार्थ हैं। ईश्वर व जीवात्मा में विकार होकर कोई नया पदार्थ कभी नहीं बनता।

प्रकृति त्रिगुणात्मक है जिसमें सत्त्व, रज व तम, ये तीन गुण होते हैं। इस प्रकृति व गुणों में विषम अवस्था उत्पन्न होकर ही यह दृश्यमान जड़ जगत् जिसे संसार कहते हैं, बनता है। ईश्वर, जीव तथा प्रकृति की सत्ता स्वयंभू अर्थात् अपने अस्तित्व से स्वयं है। यह तीनों पदार्थ किसी प्राकृतिक पदार्थ से बने हुए नहीं हैं। इन तीनों पदार्थों का कोई अन्य पदार्थ उपादान कारण नहीं है। ये तीनों मौलिक पदार्थ हैं। ये अनादि काल से अस्तित्व में हैं। इसी कारण से ईश्वर व जीवात्मा आदि सभी तीनों पदार्थ अनादि काल से हैं अत: हमारी आत्मा भी अनादि काल से संसार में है।

यह चेतन, अल्पज्ञ, एकदेशी, ससीम, नित्य, अविनाशी, जन्म व मरण के बन्धनों में फंसी हुई, कर्म करने में स्वतन्त्र तथा फल भोगने में परतन्त्र सत्ता है। ईश्वर सर्वज्ञ व सब सत्य विद्याओं से युक्त सत्ता है। ईश्वर ही जीवों को सुख देने व उनके पूर्वजन्मों के कर्मों का फल भुगाने के लिये इस संसार की रचना व पालन करते हैं। अनादि काल से आरम्भ सृष्टि की रचना, पालन व प्रलय का क्रम निरन्तर चलता रहता है। इस रहस्य को जान कर ही वेदों के अध्येता, ऋषि व विद्वान् आदि लोभ में नहीं फंसते थे और दु:खों की सर्वथा निवृत्ति के लिये ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, परोपकार एवं दान आदि सहित सत्योपदेश व वेदप्रचार आदि का कार्य करते हुए दु:खों से मुक्ति के लिए मोक्ष प्राप्ति के उपाय करते थे।

अब भी वेदानुगामी विद्वान् एवं हम सबको भी वेद में सुझाये पंच महायज्ञों का ही पालन करना है। इसी से हमारा त्राण व रक्षा होगी। इसकी उपेक्षा से हम मोह व लोभ को प्राप्त होंगे जिनका परिणाम दु:ख व बार-बार मृत्युरूपी दु:खों को प्राप्त होना होता है। इन वैदिक सिद्धान्त व मान्यताओं को हमें जानना चाहिये। यदि नहीं जानेंगे तो हम कभी भी दु:खों से बच नहीं सकते।

ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति अनादि, नित्य, अमर व अविनाशी सत्तायें हैं। इस कारण इन तीनों पदार्थों का अतीत में अस्तित्व रहा है तथा भविष्य में सदा-सदा के लिये रहने वाला है। ईश्वर जीवों के लिये अतीत व वर्तमान में सृष्टि बनाकर कर जीवों को जन्म देकर सुख व कर्मों का फल देते आये हैं और आगे भविष्य में भी सदा ऐसा करते रहेंगे। आत्मा की आयु अनन्त काल की है। इस दृष्टि से हमारा यह मनुष्य जन्म जो मात्र लगभग एक सौ वर्षों में सिमटा हुआ है, इसका आयु काल प्राय: नगण्य ही है। इस आयु में भी मनुष्य का अधिकांश समय बाल अवस्था, सोने तथा अन्य कार्यो में लग जाता है। शेष समय धन कमाने व सुख की सामग्री को एकत्र करने व बनवाने में लग जाता है।

बहुत से लोग इसी बीच रोगग्रस्त होकर अल्पायु में ही मृत्यु की गोद में समा जाते है अत: इस तुच्छ अवधि के जीवन काल में हमें अपने मोह व लोभ पर विजय पानी चाहिये। इसके साथ ही हमें सत्यार्थप्रकाश, वेद एवं वैदिक साहित्य का अध्ययन कर अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिये और दु:ख निवारण के उपाय, ज्ञान, प्राप्ति व सद्कर्मों को करके करने चाहिये। यही जीवन पद्धति श्रेष्ठ व उत्तम है। इससे इतर कोई भी जीवन शैली जो हमें सुखों की प्राप्ति के लिए केवल धनोपार्जन करने के लिये प्रेरित करती तथा वेदोक्त ईश्वरोपासना आदि की उपेक्षा करती है, सर्वांश में उत्तम व लाभप्रद नहीं हो सकती।

इन बातों व तथ्यों को हमें जानना व समझना चाहिये, इसी में हमारा हित है। इनकी उपेक्षा हमारा भविष्य दु:खद व निराशाजनक बना सकते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण तथा वेदों वाले ऋषि दयानन्द के उदाहरण व उनके जीवन चरित्रों को हमें अपने ध्यान व विचारों में स्थापित करना चाहिये। उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिये। ऐसा करके हमारा जीवन आत्मा के जन्म के उद्देश्य को पूरा करने में साधक व सार्थक होगा। यह सत्य एवं प्रामाणित है कि इस जन्म से पूर्व भी हमारा अस्तित्व था, यदि न होता तो हमारा जन्म क्योंकर होता ? इस जन्म में मृत्यु होने पर भी हमारा अस्तित्व बना रहेगा। मृत्यु का होना आत्मा का अभाव व नाश नहीं है अपितु यह पुनर्जन्म का कारण व आधार है अत: इनको ध्यान में रखकर ही हमें अपने जीवन को जीना चाहिये।

- मनमोहन आर्य
वैदिक विद्वान्, देहरादून

रवि शास्त्री

सिद्धि के साधन

य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य, वर्तते कामचारत:।
न स सिद्धिमवाप्नोति, न सुखं न परां गतिम्।।
गीता 16/3

शब्दार्थ- (य:) जो मनुष्य, (शास्त्रविधिम्) शास्त्र की विधि एवं आदेश को (उत्सृज्य) छोड़कर (कामचारत: वर्तते) अपनी इच्छानुकूल आचरण करता है, (स: सिद्धिं न अवाप्नोति) वह न तो सिद्धि या सफलता को प्राप्त कर सकता है (न सुखम्) न सुख को, (न परां गतिम्) और न मुक्ति को प्राप्त कर सकता है।

उपदेश-जन्म दिन से ही बालक के निर्माण साधनों की आवश्यकता को न केवल आर्य ऋषियों ने ही अनुभव किया है, बल्कि संसार के सब विद्वानों ने संस्कारों की महानता के आगे सिर झुकाया है। जो मनुष्य संस्कार सम्पन्न नहीं है, वह मनुष्य जीवन के उच्च आदर्श की तरफ एक कदम भी नहीं बढ़ा सकता। दु:खों से छूट कर शान्त अवस्था को प्राप्त करना, मनुष्य जन्म का परम उद्देश्य है किन्तु दु:खों से मनुष्य छूट कैसे सकता है?

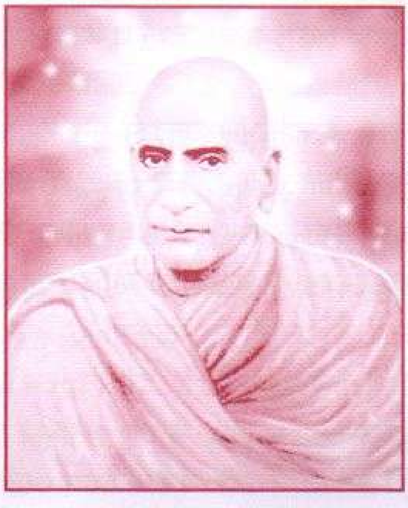

स्वामी श्रद्धानन्द जी

जब तक कि सुख प्राप्ति के साधनों का उसे ज्ञान न हो। इसलिए श्रीकृष्ण भगवान् ने सिद्धि, सुख और मुक्ति का क्रम से वर्णन किया है। किन्तु सिद्धि के लिए साधनों की आवश्यकता है। उन साधनों की वास्तविकता मनुष्य कहाँ से जाने?इसी बीसवीं शताब्दी के विद्वान् नौजवान अपने दिमाग से निकले हुए विचारों के समर्थन को ही प्रकृति का समर्थन समझते हैं, किन्तु इन नवयुवकों पर ही क्या निर्भर है?

हर समय प्रत्येक देश, प्रत्येक समुदाय के अनुभव-शून्य नवयुवक इसी तरह अपनी बुद्धि पर निर्भर करना ही सिद्धि का साधन समझा करते हैं और जब तक कि संसार के अन्दर सच्ची शिक्षा का अभाव है, तब तक बराबर इसी तरह समझा करेंगे। अशिक्षित आत्मा साधनों की वास्तविकता को समझ नहीं सकता, क्योंकि जब उसे सुख के स्वरूप का ही ज्ञान नहीं है, तो वह सुख के साधनों का सच्चा चित्र अपने लिए कब खींच सकता है?

इसलिए मनु भगवान् ने धर्म शास्त्र का उपदेश देते हुए बताया है कि मुक्ति के साधनों को जानने का सबसे छोटा और श्रेष्ठ साधन मनुष्य का अपना आत्मा है। जीवात्मा की हालत ठीक दर्पण की तरह है। जिस कदर एक शीशा अधिक साफ किया जावे उसी कदर सफाई के साथ वस्तुओं का प्रतिबिम्ब उसके अन्दर पड़ता है और उसी कदर सच्चाई के साथ उन चीजों की बाह्य स्थिति देखने वालों के लिए प्रकट कर सकता है, परन्तु यदि शीशे पर मैल व मिट्टी आदि से उसका रूप धुंधला पड़ जाये तो उसके अन्दर वस्तुओं का प्रतिबिम्ब बिल्कुल उल्टा पड़ेगा।

इसी तरह जो जीवात्मा अशक्त है, बिगड़ते-बिगड़ते अविद्या का बिल्कुल शिकार हो जाता है, उसके लिए उसका अपना प्रकाश कुछ भी मार्गदर्शक का काम नहीं कर सकता। यदि उसकी शिक्षा ठीक हो तो वह केवल ठीक रास्ते का पता लगाने वाला बन जाता है। आगे चलने के लिए उसे फिर दूसरे पवित्र आत्माओं से शिक्षा लेने की आवश्यकता पड़ती है किन्तु दूसरे पवित्र आत्मा भी एक निश्चित सीमा तक मार्ग प्रदर्शन कर सकते हैं। कभी-कभी ईर्ष्या या द्वेष में फंसकर सदाचारी पुरुषों का आचार भी धोखा देने वाला सिद्ध होता है, तब शास्त्र के मार्ग दिखाने की आवश्यकता होती है।

जब कि बड़े-बड़े आत्मा भी सर्वज्ञ नहीं, इसलिए उनकी लिखी हुई शिक्षायें (जो उनके बनाए शास्त्रों में लिखी हैं) भी पूरा-पूरा मार्ग प्रदर्शन का काम नहीं दे सकतीं। तब पूर्ण शास्त्र की ढूँढ होती है और वह परमेश्वर का निर्भ्रान्त और अनन्त ज्ञान = वेद है। हे मनुष्य! उस अनन्त और निर्भ्रान्त ज्ञान को ढूँढ कर और उसे पाकर उसमें वर्णन की हुई बुद्धि के साँचे में अपने जीवन को ढ़ाल। फिर तेरे लिए मुक्ति का मार्ग बिल्कुल सुगम हो जाएगा। वह पूर्ण शास्त्र कहाँ है और उस वेद ईश्वरीय ज्ञान की कहाँ खोज करें? यह प्रश्न किस मनुष्य के हृदय में कभी न कभी नहीं उठता? इसका उत्तर देने का भी किसी न किसी समय यत्न किया है। यह प्रश्न जैसे मनु भगवान् के समय नवीन था, वैसा अब भी है। जब तक प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं मिलता तब तक मनुष्य का हृदय डांवाडोल रहता है। जगत् पिता अपनी कृपा से हम सबके हृदयों को हिला देवें जिससे हम उसके सच्चे ज्ञान को ढूँढ करके अपने जीवन की सिद्धि के लिए सच्चे साधन जानकर सच्ची शान्ति की ओर पग उठायें।

मूल लेखक: स्वामी श्रद्धानन्द जी संकलन: -**रवि शास्त्री**
संस्कृत अध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

शिक्षा मंत्रालय द्वारा सांसदों को दी जाएगी वेदों की प्रतियां

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली- भारतीय ज्ञान परंपरा और वेदों से अब सिर्फ देश की नई पीढ़ी को ही जोड़ने की पहल नहीं होगी बल्कि इससे सांसदों को भी जोड़ा जाएगा। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ की पहल पर शिक्षा मंत्रालय जल्द ही राज्यसभा और लोकसभा के सभी सदस्यों को वेदों की प्रतियां देने की तैयारी में है। माना जा रहा है कि संसद के शीतकालीन सत्र में सभी को वेदों की यह प्रतियां भेंट कर दी जाएंगी। इस दौरान सांसदों को पिछले दस सालों में संस्कृत, हिंदी सहित दूसरी सभी भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने और नई पीढ़ी को वेदों से जोड़ने के लिए उठाए गए कदमों से भी संबंधित ब्यौरा भी दिया जाएगा। शिक्षा मंत्रालय ने यह पहल तब की है, जब संसद के पिछले सत्र के दौरान संस्कृत व वेद विद्यालयों से जुड़े सवालों का जवाब देने के दौरान राज्यसभा के सभापति धनखड़ ने शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से सदन के प्रत्येक सदस्यों को वेदों की की एक-एक प्रति मुहैया कराने का अनुरोध किया था। इसके बाद प्रधान ने उन्हें सदन में ही इस बात का भरोसा दिलाया था कि वह जल्द राज्यसभा ही नहीं बल्कि दोनों सदनों के सभी सदस्यों को वेदों की प्रतियां मुहैया करा देंगे। शिक्षा मंत्रालय से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक सांसदों को वेद की प्रतियां मुहैया कराने की तैयारी तेजी से चल रही है। माना जा रहा है कि वेद की प्रतियां मिलने के बाद सांसदों में इन्हें पढ़ने के लिए भी रुझान बढ़ेगा। ऐसे में वे भारतीय ज्ञान और शास्त्रों से ज्यादा से ज्यादा लोग परिचित होंगे और वेदों में निहित ज्ञान को देश के कर्णधार भी अच्छे से जान पाएंगे।

अमेरिका, आस्ट्रेलिया सहित विदेशों में सत्यार्थप्रकाश की भारी डिमांड

विदेशों में भी युवा वैदिक ज्ञान और सत्यार्थप्रकाश का कर रहे अध्ययन

अजमेर में हुए ऋषि मेले में चंडीगढ़ से पहुंचे 75 साल के बुजुर्ग सेना से रिटायर्ड मेजर विजय आर्य दुनियाभर में वैदिक ज्ञान की रोशनी फैला रहे हैं। साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, केन्या, अमेरिका, कनाडा, थाईलैंड, सिंगापुर, मलेशिया, ऑस्ट्रेलिया, हॉलैंड, जर्मनी सहित अन्य देशों में जहां भी आर्य समाज का कोई कार्यक्रम होता है, मेजर विजय वहां जरूर पहुंचते हैं। 250 से ज्यादा तरह की वैदिक शिक्षा की पुस्तकें जिनमें चारों वेद, सत्यार्थ प्रकाश (लाइट ऑफ ट्रूथ), महर्षि दयानंद सरस्वती, विरजानंद सहित अन्य महापुरुषों की जानकारी देने वाली किताबें शामिल हैं। मेजर आर्य ने कहा कि दूसरे देशों में सत्यार्थ प्रकाश लेने वालों में सर्वाधिक वहां के स्थानीय लोग होते हैं। अमेरिका, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और हॉलैंड में सत्यार्थ प्रकाश की डिमांड ज्यादा है।

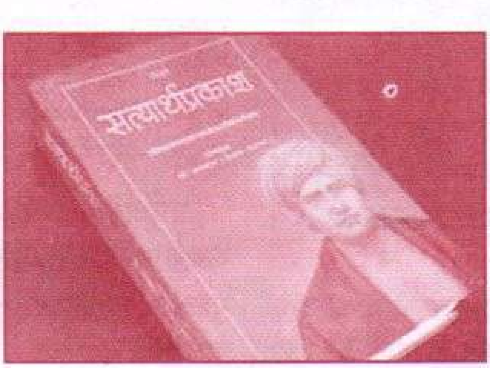

वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर चुका रहे हैं मिट्टी का कर्ज

सेना के 61 इंजीनियरिंग कोर की 103 कंपनी के मेजर विजय आर्य 1971 में कतर की लड़ाई में मरकर जिंदा हुए हैं। मेजर आर्य बताते हैं कि 3 दिसंबर 1971 में एयर अटैक हुआ था, उस समय नावों में टैंक रखकर ब्रिज पार करवा रहे थे। अचानक संदेश मिला, अखनूर के छंप सेक्टर में बम गिराए जा रहे हैं। 8 दिसंबर को खोर में दुश्मन ने 500-500 पौंड के बम गिराए। मौके से 40 शव निकले, मेजर विजय ने बताया वे साथी जवानों के साथ गर्दन तक मिट्टी में दब गए थे। युद्ध में बमबारी बंद होने पर क्लियरेंस मिला। इसके बाद सुरक्षित बाहर निकाला गया। मेजर विजय ने कहा कि दूसरे देशों में वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर मिट्टी का कर्ज चुका रहे हैं।

वेदों पढ़ने वालों में युवा सर्वाधिक

वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जब मेजर आर्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, हॉलैंड, कनाडा सहित अन्य देशों में पहुंचे, तो के वहां देखा कि 18 से 25 साल के युवा वैदिक ज्ञान यानी वेदों का अध्ययन करने वालों में सर्वाधिक हैं। युवा सादा जीवन उच्च विचार से खासा प्रभावित हैं और कई विदेशी विद्यार्थी इसी शिक्षा को जीवन का आधार मानकर आगे बढ़ रहे हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई.पाठ्यक्रम के अनुसार **10+2** तक का विद्यालय है जो **ISO 9001: 2015** प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही यहां **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है –

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला भव्य प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

प्राकृतिक कृषि फार्म एवं अनुसंधान केन्द्र : गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा **महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी** के मार्गदर्शन में 180 एकड़ भूमि पर प्राकृतिक कृषि की जाती है। साथ ही यहां पर प्राकृतिक खेती को लेकर नये प्रयोग भी किये जा रहे हैं जिससे खेती को किसानों के लिए फायदेमंद बनाया जाए। साथ ही गुरुकुल परिसर में किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षण हेतु भव्य प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण किया गया जिसमें किसानों को नि:शुल्क प्राकृतिक कृषि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 100 से अधिक कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 335 गायें हैं जो प्रतिदिन 1500 लीटर दूध देती हैं।

घुड़सवारी: इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

निशानेबाजी प्रशिक्षण : इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु): गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.): सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस व स्कॉउट विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है। स्कॉउट विंग भी यहां स्थापित है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे: गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी '**डिप्लोमा इन योग एंड साइंस**' कोर्स भी कराया जाता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग बनाया गया। वेद प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूमकर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक करते हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र : लोगों को जहरमुक्त एवं रसायनमुक्त फल, सब्जियाँ व अन्न उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा '**प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र**' खोला गया है जहाँ पर गुरुकुल के सभी उत्पाद उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।

इनके अतिरिक्त **स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला** भी है। **आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र**, जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं '**गुरुकुल-दर्शन**' मासिक पत्रिका से वैदिक धर्म एवं सनातन संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

गुरुकुल के 111वें वार्षिक महोत्सव में छात्रों द्वारा लगाई गई विज्ञान प्रदर्शनी की झलकियां

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244
Postel Reg. No. HR/ KKR/ 181/ 2021-2023

स्वामी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री राजकुमार गर्ग द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड निकट डी. एन. कॉलेज कुरुक्षेत्र से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक : राजकुमार गर्ग

मूल्य : 150 रुपये (वार्षिक)

प्रतिष्ठा में

मंत्री